अप्रैल - जून 2026

दीया बाती

बरिस - एक
चौथा अंक

भोजपुरी, तिमाही, ई-पत्रिका

सम्पादक-
डॉ. राजेन्द्र भारती

वन्दना दूबे

गाजीपुर, उत्तर प्रदेश
शिक्षा- एम.ए. (समाजशास्त)
बॉम्बे आर्ट

वन्दना दूबे

तूलिका

उपलब्धियां -

1. संस्कृति मंत्रालय से जूनियर आ सीनियर फेलोशिप
2. राष्ट्रीय कला मेला, ललित कला अकादमी मेला जइसन दर्जनन मेलन में सहभागिता
3. सब टीवी चैनल प साक्षात्कार
4. नेहरू केन्द्र, लंदन में कला प्रदर्शनी
5. संस्कार भारती कला महोत्सव।

आदि।

पुरस्कार -

1. कला सृजन सम्मान
2. कला उत्सव सम्मान
3. राष्ट्रीय विशिष्ट सेवा सम्मान
4. त्रिवेणी राष्ट्रीय गौरव सम्मान
5. साहित्य कला परिषद सम्मान, दिल्ली।

आदि।

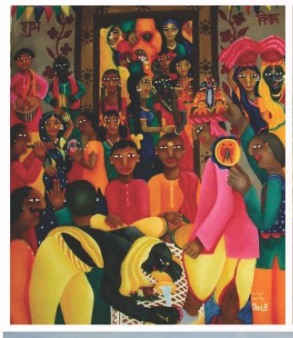

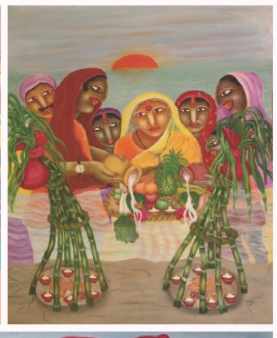

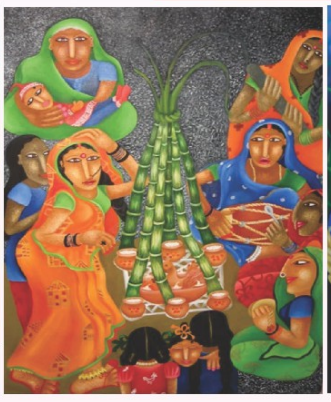

दीया बाती

चौथा अंक अप्रैल - जून 2026

तिमाही, भोजपुरी, ई-पत्रिका

संपादक
डॉ0 राजेंद्र भारती

सह संपादक
डॉ0 कादम्बिनी सिंह

प्रबंध संपादक
सुनील कुमार यादव

ग्राफिक्स
संदीप वर्मा

कंपोजिंग
सुनीता पर्वत

वेबसाइट संचालन
संत प्रकाश शर्मा

कानूनी सलाहकार - एडवोकेट श्वेता पाण्डेय मिश्र

आवरण चित्र
मोहिनी तिवारी
पौहारीपुर- बलिया

संपादन कार्यालय
C/O भारती दवा केन्द्र
अमृतपाली, सहरसपाली- बलिया
सचल दूरभाष: 7007319538

प्रकाशक- रेयर एयर फाउण्डेशन, बलिया

निहोरा –

अधिक से अधिक भोजपुरिया लोगन तक एह पत्रिका के पहुंच होखे, एकर सार्थक प्रयास के सहयोग चाहीं ।

घोषणा –

1. पत्रिका में छपल लेख, कविता, कहानी, गीत, गजल, निबंध आदि विषय वस्तु के पूरा जिम्मेदारी लेखक लोग के बा । केवनो लेख से पत्रिका परिवार के सहमति होखे, ई जरूरी नइखे ।

2. सब पद अवैतनिक।

डॉ. राजेन्द्र भारती

संपादक
दीया बाती
भोजपुरी, तिमाही, ई-पत्रिका

डॉ. राजेन्द्र भारती

आजु क तेजी से बदलत दौर में, जहवां लोगन क जीवन भाग - दौड़ से भर गइल बा, ओहिजा "दीया बाती" जइसन पत्रिका भोर के कीरिन लेखा चमक रहल बिया। ई पत्रिका खाली लेख के संग्रह ना ह, बलुक समाज, संस्कृति आ विचार के एगो सजीव मंच ह।

हमार कोशिश बा कि गाँव - गिरांव के सुगंध, लोक - जीवन के सादगी आ भोजपुरी भाषा के मिठास हर पाठक तक पहुँचे। आज जब नवकी पीढ़ी धीरे - धीरे आपन मातृभाषा से दूर होत जा रहल बा, त "दीया बाती" के माध्यम से हम सभे के ई जिम्मेदारी बा कि अपना भाषा आ संस्कृति के बचावल जाव आ आगे बढ़ावल जाव।

एह पत्रिका में छपल हर रचना - चाहे ऊ कविता होखे, कहानी, लेख भा अनुभव – समाज के सच्चाई के ही एगो रूप ह। हम चाहत बानी कि हर पाठक ना खाली पढ़े, बल्कि सोचे, समझे आ कुछ नया करे के प्रेरणा लेवे।

"दीया बाती" के उद्देश्य साफ बा – ज्ञान के रोशनी फैलावल, सकारात्मक सोच के बढ़ावा देहल आ समाज में जागरूकता पैदा कइल। हमरा विश्वास बा कि छोट - छोट प्रयास से बड़हन बदलाव आ सकेला।

अंत में, हम अपना पाठक लोगन, लेखक आ सहयोगियन के धन्यवाद देत बानी, जिनकर सहयोग से ई पत्रिका निरंतर आगे बढ़त बिया। आईं, सब केहू मिलके ज्ञान के ई दीया जरावत रहल जाव आ समाज में अंजोर फइलावत रहल जाव।

डॉ0 विमल कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कुँवर सिंह पी.जी. कॉलेज, बलिया

डॉ० विमल कुमार

दीया बाती पत्रिका खातिर हार्दिक शुभकामना बा ! ई पत्रिका ज्ञान, संस्कृति आ सभ्यता के रोशनी फइलावे के काम कर रहल बिया ।हमार कामना बा कि ई पत्रिका हर पाठक के दिल में नया सोच, जागरूकता आ प्रेरणा के दीया जरावे। भोजपुरी भाषा के मिठास आ अपनापन के संगे ई पत्रिका समाज के हर कोना तक उजाला पहुँचावे । लेखक आ संपादक मंडल के मेहनत रंग लावे आ ई पत्रिका के दिन दूना रात चौगुना बढंती होखे। दीया बाती हरदम ज्ञान के अंजोर बिखेरत रहे, एह शुभेच्छा के संगे बहुत बहुत बधाई आ शुभकामना।

सभकर जय होखे !

कहवां का बा

शीर्षक	पन्ना क्रमांक
निबंध-	
1. सतुआन परब (जय प्रकाश तिवारी)	01
2. कबीर क समाज दरसन (राम पुकार सिंह 'पुकार गाजीपुरी')	03
3. नवरात परब (देव कुमार सिंह)	06
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (भगवती प्रसाद द्विवेदी)	14
कहानी-	
1. बनारस वाली मइया (डॉ0 सुशीला ओझा)	19
2. बखरा (डॉ0 शिप्रा मिश्रा)	23
3. बाबू जी के सीख (विंध्याचल सिंह)	25
4. नचदेखवा (महेन्द्र तिवारी)	28
5. काकोरी काण्ड (ऋषिदेव)	32
कविता-	
1. सुननी हं कि कनिया आइल (श्वेता पाण्डेय मिश्र 'खुश्बू')	33
2. चिरईया (मोहन जी श्रीवास्तव)	35
3. भोजपुरी लोक अ बाजारवाद (कनक किशोर)	36
4. चुनाव (गणेशनाथ तिवारी 'विनायक')	38
5. कहवां हेरा गइल (शशिलता पाण्डेय सुभाषिनी)	40
6. केकरा के कही ! (अनिरुद्ध कुमार सिंह)	42
7. सुन्दर देसवा (प्रेरणा अनमोल)	44
8. का हो भाई ? (शिवम तिवारी)	46
9. बिसरल ऊ दिन (मनीष पाण्डेय 'कनक')	47
10. मईया तोहके गोड़ लागेनी (अमर वर्मा)	48
गीत-	
1. देवी गीत (शिवजी पाण्डेय 'रसराज')	50
2. समइया बलवनवा (बृजमोहन प्रसाद 'अनारी')	51
3. चढ़ते चइत नाहीं, अइलन हो रामा (राम बहादुर राय)	53
4. माई (गजाधर शर्मा 'गंगेश')	55
5. सोच (डॉ0 राम सेवक विकल)	57
6. संगे जाए वाला नइखें (डॉ0 नवचन्द्र तिवारी)	59
7. कहलो ना जाला कइसे कहि के सुनाई (डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप')	60
8. अवधपुरी में बाजे रे बधईया (कुमार जगदली 'सुनील')	62
9. का – का जतन कइलीं (सुशीला पाल)	64
गज़ल-	
1. घर के बहरी (डॉ0 कादम्बिनी सिंह)	65
2. नैन (नुरैन अंसारी)	66
3. जवानी के दिन (रामनाथ बेख़बर)	68
4. धरेलू संसद के गृहमंत्री (तौसीफ अहमद)	70
5. जिनिगी (मनोज भावुक)	72

लघु कथा-

1. कुकुर (राघवेन्द्र प्रकाश 'रघु') 73
2. सतनारायन के संघर्ष (राजेश कुमार सिंह 'श्रेयस') 75
3. तुलसी गंगाजल (सुनील कुमार यादव) 77

विविध-

1. स्मृतिशेषः डॉ0 नन्द किशोर तिवारी (राजेश भोजपुरिया) 78
2. डॉ0 भीमराव अम्बेडकर : जीवन संग्राम आ विचार के क्रांति (डॉ0 विमल कुमार) 81

जय प्रकाश तिवारी

बलिया / लखनऊ

सचल दूरभाष- 9453391020

जय प्रकाश तिवारी

सतुआन परब

सतुआन परब मुख्यत : बिहार, उत्तर प्रदेश खास क के पूर्वांचल, झारखंड आ असम के एगो प्रमुख लोकपर्व ह। ई गरमी के शुरुआत के समय, होली आ चइत नवरात के बाद मनावल जाए वाला महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आ सामाजिक परब ह। एह परब के आम जनता आ किसान के परब भी कहल जाला। किसान लोग अपना नया फसल (जौ, चना आदि रबी) के पहिला उपज के भुज के सातू बना के भगवान के भोग लगावेला आ बढ़िया फसल खातिर कृतज्ञता के रूप में अनाज अर्पित करेला।

आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्व :

भारत में मनावल जाए वाला हर परब के आपन धार्मिक, आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्व होला। वैदिक काल से किसान लोग अपना नया फसल के सूर्य देव के समर्पित करत आइल बा। किसान वर्ग के मान्यता बा कि सूर्य देव ऋतुअन के स्वामी हउवें। उनकर किरपा से अलग - अलग मौसम में तरह - तरह के फसल उगेला आ फलेला - फूलेला।

अनाज के अलग - अलग रूप में कृतज्ञता आ खुशी के भाव से भगवान के समर्पित करे के परंपरा भारत में बहुत पुरान बा। चेतना आ संवेदना के विकास के संगे - संगे ई परंपरा भी ओतने पुरान बा जतना पुरान हमनी के सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक चेतना बा।

अब प्रश्न उठ सकेला कि सतुआन परब के परंपरा कतना पुरान बा ? जइसन ऊपर बतावल गइल बा, ई ओतने पुरान बा जतना हमनी के सांस्कृतिक चेतना। वैदिक ग्रंथ हमनी के सांस्कृतिक चेतना, बुद्धि आ विवेक के मार्गदर्शक मानल जालें, आ ओह में ऋग्वेद के सबसे पहिला स्थान बा। ऋग्वेद में भी सतुआ (सुक्तू) के उल्लेख मिलेला।

"सत्तू" शब्द संस्कृत के "सुक्तू" शब्द से निकलल मानल जाला, जेकर अर्थ भुजाइल अन्न ह, खास करके जौ (यव) के भुजाइल दाना। ई जौ यज्ञ में हविष्य के रूप में भी इस्तेमाल होत रहल बा। बाद में जौ के साथ चना भुजा के एगो निश्चित अनुपात में मिला के सतुआ बनावल जाए लागल।

ऋग्वेद में ई सत्तू (सकति) के उल्लेख इन्द्र देव के भोज्य पदार्थ के रूप में भी मिलेला - "यज्ञं नक्तं हविषा सूक्तना ते" (ऋग्वेद 10.115.4)।

एह तरह महाभारत आ अन्य पौराणिक ग्रंथन में भी कई जगह ऋषि - मुनियन द्वारा सतुआ के सात्विक आ शुद्ध भोजन के रूप में सेवन आ दान करे के उल्लेख मिलेला।

खगोलीय महत्व :

बाकी भारतीय परबन के तरह एह परब के भी आपन खगोलीय महत्व बा। ई मेष संक्रांति के दिन मनावल जाला, जब सूर्य देव मीन राशि से मेष राशि में प्रवेश करेलन। ई परब आमतौर पर वैशाख महीना के शुरुआत में (14 भा 15 अप्रैल के) मनावल जाला।

एह दिन सतुआ के साथ आम के पेड़ पर लागल नया - नया अमिया के चटनी खाए के परंपरा बा। सतुआन से खरमास के चलते रुकल मांगलिक काम फिर से शुरू हो जाला।

सतुआ किसानन के सदाबहार भोजन मानल जाला। कम खर्च में स्वादिष्ट आ बहुत पौष्टिक होखे के वजह से ई स्वास्थ्य के लिहाज से भी बहुत फायदेमंद बा। सतुआ से बनल कई गो देहाती व्यंजन जइसे - बाटी - चोखा, सतुआ के पराठा, (मकुनी, लिट्टी, फुटेहरी) आदि पूरा उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय बाड़ें। आजकल सतुआ से बनल व्यंजन बड़ - बड़ शादी - बियाह आ समारोह में भी परोसल जाए लागल बा।

धार्मिक महत्व :

सतुआन परब के दिन किसान लोग भदवा के संगे - संगे समाज के शिक्षित करे वाला ब्राह्मण आ पुरोहित वर्ग के भी याद रखेला। एह दिन माटी भा पीतर के मटका में सतुआ आ गरमी से बचाव खातिर हाथ के पंखा भेंट कइल जाला। कई लोग बिजली वाला पंखा भी दान करेला।

ई परंपरा लोकहित, गुरुजन - सम्मान आ कृतज्ञता के भावना के प्रतीक ह। आज समय बदल गइल बा, व्यवस्था भी बदल गइल बा, लेकिन श्रेष्ठता आ ज्ञान के प्रति आभार के भावना आज भी कवनो ना कवनो रूप में जिंदा बा। एह तरह ई परब लोक - शिक्षा के काम भी करेला आ परिवार में संस्कार आ संवेदनशीलता बढ़ावेला।

ऊपर बतावल गइल बा कि पुरान समय में ऋषि मुनि सतुआ के सेवन करत रहलें। आजकल कुछ जगह पर सतुआन में सतुआ के जगह सिंघाड़ा के आटा के इस्तेमाल भी होखे लागल बा। अब सवाल उठेला कि सतुआ के जगह सिंघाड़ा के आटा कइसे आ काहें इस्तेमाल होखे लागल ?

चेतना के विकास के साथ फल के अन्न से अधिक शुद्ध मानल जाए लागल। एह वजह से व्रत में अन्न के जगह फलाहार के परंपरा बढ़ गइल। जब सिंघाड़ा के सुखा के ओकर आटा बनावे के तरीका सामने आइल, तब भुजाइल अन्न के आटा के जगह कई जगह सिंघाड़ा के आटा इस्तेमाल होखे लागल। हालांकि व्रत के अलावा सतुआ के उपयोग कम ना भइल, बल्कि आज भी बहुत लोकप्रिय बा।

राम पुकार सिंह 'पुकार गाजीपुरी'

गाजीपुर / कोलकाता

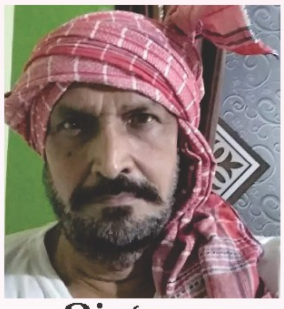

राम पुकार सिंह 'पुकार गाजीपुरी'

कबीर क समाज दरसन

जवनी घरी कबीर कऽ जनम भइल रहे ओह घरी समाज में चारों ओरि जड़ता, रुढ़िवादिता आ विच्छृंखलता पूरा - पूरा फूलल आ फरल नजर आवत रहे। इस्लाम के आगमन होखे के पहिलहि सामंतवादी ढ़ांचा सामाजिक रुढ़ियन के चलते आपन गति हेरवा देले रहे आ दुसरे ओरि इस्लाम के अइला पर सामाजिक जटिलता के अउर जटिल बना दिहलस। प्रतिक्रिया कऽ तौर पर समाज कऽ जड़ता में क्षोभ कऽ तूफान उठल जवने कारन से समूचे समाज के आत्म निरीखन करे के पड़ल। बाकिर समाज में जड़ता, रूढ़ीवादिता आ विच्छृंखलता में कवनो कमी ना आइल, बलुक दिन पर दिन उल्टे ओकरा में बढ़ोत्तरी भइल। अपने देश कऽ समाज में धरम के नाम पर खूब शोषण होखे लागल। लेकिन एकरे चलते एगो अजबे तरह कऽ लाभ भइल कि समाज कऽ आत्म निरीखन करे खातिर लोगन के सोच में बदलाव भइल। शायद एहि कुल के नतीजा कऽ रुप में कबीर जइसन मानवता के पुजारी आ समाज सुधारक महापुरुष कऽ अविर्भाव भइल।

इस्लाम शासन के दौरान सामंतवादी शासन दिन दूना राति चौगुना बढ़त गइल जेकर आधार देहवाद अउर अर्थवाद रहे। समाज में विलासी सुभाउ कऽ अइसन बढ़ोत्तरी हो गइल कि ओह घरी औरतन के उपभोग कऽ वस्तु समझल जात रहे।जवना समाज के लोग कऽ एह तरह कऽ सोच हो गइल रहे उह लोग कऽ पतन कतना हो गइल रहे ओकर वर्णन करे खातिर शब्दन कऽ भी अभाव पड़ी। अइसन समाज के देख के कबीर कऽ भी दिल रोवत रहे।कबीर कऽ सोच खाली हवा - हवाई ना रहे बलुक पूरहन जमीन से जुड़ल रहे। एही कारन से उहां के समूचे सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार कइलीं। इहां तक कहल जा सकेला कि भले ही कबीर कऽ सामाजिक चिन्ता राजनीतिक व्यवस्था से सीधे - सीधे ना टकराइल लेकिन उहां के सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था के अलावा राजनीतिक व्यवस्था पर भी प्रहार कइलीं। ओह घरी के व्यवस्था पर "साखी" में उनकर लिखल बड़ सुघर वर्णन मिलेला --

"चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।"

एह साखी कऽ खाली आध्यात्मिक अर्थ नइखे, बलुक एकर संबंध सामाजिक सरोकारों से बाऽ। आपन एह सोच में कबीर समाज कऽ जवन दरसन दिहले ओह में उनकर विद्रोही तेवर साफ - साफ झलकत बाऽ। अइसन अवस्था में समाज के चेतावे खातिर व्यंग्य आ उपहास से दुसर बढ़िया तरीका कवनो ना हो सकेला। अर्थवाद कऽ जाल के खिलाफ भी कबीर

आपन विद्रोही तेवर के ही अपनवले।

"मन बनिया वनिज न छोटे, जनम जनम का मारा बनिया अजहूँ पूर न तोले।"

एह बात के जानते हुए कि सामन्तवादी व्यवस्था में शोषण करे वालन कऽ समूह उनकरा बात - विचार से चिढ़ेला, एकरा बावजूद भी कबीर ओह लोगन के चेतावे से रत्ती भर भी बाज ना अइलन।

"साँच कहौ तो मारन धावा,
झूठे जग पतियाना।"

कबीर कऽ सामाजिक सोच में उनकर विवेकवाद साफ - साफ झलकेला। एही कारन से उहां के अपना के समूचा व्यवस्था से दूर राखि के समाज कऽ रूढ़िवादियन के चेतावनी के अंदाज में ललकार के कहले -- "तू कहता कागद की लेखी,
मै कहता आंखन की देखी।"

कबीर के राम, गोविंद, अलख निरंजन सामाजिक संदर्भ में चरण उदात मानवीय मूल्यन कऽ समवाय हऽ। उनकर धारना रहे कि साँच ही भगवान हऽ।

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।"

कबीर कऽ सोच रहे कि समाज के पतन कऽ असल कारन ह वर्ग भेद आ जाति भेद के पूरा - पूरा समागम। उनका अनुसार इस्लाम के आवे के पहिले सनातनी हिन्दू व्यवस्था में पहिले जाति भेद पनपल आ इहे जाति भेद वर्ण भेद के रुप धइ लिहलस, फेरू इस्लाम के अइला के बाद एगो सम्प्रदाय भेद अउर जुड़ गइल। सामाजिक कुरीति आ अंधविश्वास में जकड़ गइल भी एक तरह के गुलामिए हऽ। साहित्य एकरा से कबो भी मुँह ना मोह सकेला। एही कारन से कबीर सब किसिम के भेद के जड़ से नेस्तनाबूद कइल चाहत रहलन। एकर पक्ष लेके ललकार के कहलन --

"एक बूँद एक मल मूतर, एक चाम एक गूदर।
एक जोति से सबै ऊपजा, को बामन को सूदर।।"

सम्प्रदायवाद के खिलाफ तऽ उनकर चेतावनी अउर जोरदार आवाज में निकलल --

"अरे इन दोहुन राह न पाई।
हिन्दू अपनी करै बड़ाई गागर छुअन न देई।
बेस्या के पायेन तर सोवै यह देखो हिन्दुआई।
मुसलमान के पीर - औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहै घरहि में करै सगाई।
बाहर से इक मुर्दा लाए धोय - धाय चढ़वाई।
सब सखियाँ मिली जेंवन बैठी घर भर करै बड़ाई।
हिन्दुन की हिन्दुआई देखी तुरकन की तुरकाई।
कहै कबीर सुनो भाई साधों कौन राह ह्वै जाई।"

कबीर समाज के हर वर्ग के रुढ़ियन प जब - जब मौका पवले तब - तब तीखा प्रहार कइलन। हिन्दुअन आ मुसलमानन के बीच साम्प्रदायिक बिद्वेष से समाज के चरमरा के टुटत

देखि के दूनों कऽ भण्डा फोड़ करे में तनिको ना हिचकिचइलन।

"संतों राह दुनों हम दीठा।
हिन्दु तुरुक हटा नहिं मानै स्वाद सभन को मीठा।।"

कबीर कऽ सोच रहे कि बिना आत्म संघर्ष के सामाजिक गतिशीलता ना आ सके आ ओकरा खातिर पुरुषार्थ कऽ होखल जरुरी हऽ।

"मन रे जागत रहिये भाई,
गाफिल होइ बसत मति खोवै, चोर मुसै घर जाई।

अब तक के तथ्य के आधार पर इ कहल जा सकेला कि कबीर धार्मिक संगठनात्मक ढ़ांचा, मानवीय रूढ़िवाद कऽ विरोध में आपन असंतोष खुल के जाहिर कइलन। अपना जनम से लेके मरते दम तक उनकर क्रान्तिकारी अंदाज आ विद्रोह वाला तेवर समाज खातिर हर समय जाहिर भइल। उनकर समाज दरशन पूरा कऽ पूरा यथार्थवादी रहे। उनका भासा में सामाजिक सरोकार गहराई से जुड़ल साफ - साफ झलकेला।उनकर संवेदना कऽ धरातल ठोस रहे आ सशक्त तर्क पर आधारित रहे। तर्क पद्धति के आधार पर अवधूत, पंडित आ मुल्ला सभे के चुनौती देबे कऽ क्षमता कबीर के पास रहे।

"तू बाम्हन मै काशी का जुलाहा
बूझहु मोर गियाना।"

कबीर के सोच कऽ मुताबिक रोटी कऽ माध्यम धरम ना होखे के चाही। मेहनत पर उनकर निष्ठा उनके
"झीनी - झीनी रे बीनी चदरियां" में एकदम साफ - साफ झलकेला। एह में कवनो शंका आ अविश्वास नइखे कि कबीर कऽ समाज दरशन आज भी पूरा - पूरा प्रासंगिक नजर आ रहल बा।

देव कुमार सिंह

पूर्व प्रधानाचार्य

मां कात्यायनी कॉलोनी, परिखरा,
तीखमपुर, बलिया, उत्तरप्रदेश

देव कुमार सिंह

नवरात परब

पहिलका दिन : माई शैलपुत्री

हिमालय पर्वत के आस पास दानवन के जब बहुते उत्पात बढ़ गईल, ऊ पेड़ खूट उखाड़े लगलेस, स्वर्ग से देवता लोगन के पीट के खदेड़ देलेस, महिषासुर के आतंक से इंद्र भी लुकाईल फिरस। पूरा सृष्टि में त्राहि - त्राहि मच गईल तब सब देवता लोग भगवान ब्रह्मा के पास गईलन। ऊ ओ लोग के ले के शंकर भगवान के पास गईल लोग। शंकर भगवान कहले कि भगवान हरि सब जगह बाड़े आ प्रेम से प्रगट होले, उनकर विनती कईल जाव। ऊ सब देवता प्रेम से उनकर वंदना कईल लोग त तुरन्त प्रगट हो गईले आ कहले कि हिमालय पर्वत घनघोर तप कईले रहले आ हम जब उनकरा के दर्शन देनी त एगो बेटी मंगले आ कहले कि बेटी सबसे अधिक सेवा करे ली स, ऊ दुनो कुल तारे लीसऽ, ऊ धन, सम्पदा, सुख, शांति आ मोक्ष के दाता हई स। हम उनका के वरदान देनी आ कहनी कि सब प्राणी में जवन माई के करुणा बा, शक्ति के मूल तत्व बा, श्रद्धा के भाव बा, ऊहे तहरा घर में अवतार लीहें। ऊ हे देवी तहन लोग के रक्षा करिहें।

कुछ समय के बाद हिमालय पर्वत के घर में ऊ अवतार ले ली। सब देवता लोग उनकर पूजा, वंदना कईल आ आपन आपन अस्त्र, शस्त्र उनुका के दिहलस।

ऊ पहिले महिषासुर के समझवली कि अत्याचार मत कर, पेड़ खूंट उखाड़ - उखाड़ के मत गिराव, पेड़ से ऑक्सीजन, छांह, फल, फूल, जड़ी, बूटी मिलेला। संसार में जे पेड़ काटेला, बिना कवनो गलती के दूसरा के सतावेला, कष्ट दे ला उहे राक्षस कहाला। तू देवता लोग के एक लाद के भाई हव, शान्ति से रह आ शान्ति से रहे द। जिय आ जिए द। बाकिर ऊ मनलस ना। ऊ उनका प आक्रमण क दीहलस। देवी पार्वती तुरंत ओकरा पूरा सेना के मार देली आ कहली,"अबहिओ से सुधरब त सुधर जा।" ओकरा प मौत सवार रहे, ना मनलस। देवी ओकरा के मुआ दे ली। ओ दिन से उनकर एगो नाम महिषासुरमर्दिनी हो गईल।

पहिले पूरा विधि विधान से पूजा होत रहल हा। अब ढकोसला, दिखावा बढ़ल जाता। श्रद्धा घट गईल बा, मनोरंजन ढेर बढ़ गईल बा। पूजा में अपने या विद्वान संतोषी बाबाजी से दुर्गा सप्तशती के पाठ, मंत्र जाप, हवन होखे के चाहीं। अत्याचारी आ अहंकारी रावण के मारे से पहिले भगवान राम भी शक्ति के पूजा कईले रहलन। देवी के पूजा श्रद्धा भाव से, सच्चा मन से, बाहर, भीतर से पवित्र होके कईल जाला। सब लड़की, औरत में दुर्गाजी के रूप देखे के भाव मन में होके के चाहीं। दादी, माई, बहिन, बेटी, भौजाई, भवह, पास पड़ोस, सगरे के नारी में देवी के रूप देखे के भाव रखीं आ अवसर मिले त उनकर आदर, सेवा, सत्कार, सम्मान करीं। अपना माई, बहिन, बेटी, के दुःख देके

मन्दिर में देवी के पूजा करे जायीब त देवी कबो खुश ना होइहे। उनकर मंत्र पढ़ीं, जपीं आ नारी के सम्मान करे के आदत डालीं।

सब जीव जन्तु में तू ही बाड़ू, करुणा रूप में माई।
बार - बार परनाम करीं हम, रऊआ जग के करीं भलाई।।

या देवी सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।

दुसरका दिन : माई ब्रह्मचारिणी

नवरात के दूसरका दिन दुर्गा माई के ब्रह्मचारिणी स्वरूप के ध्यान, पूजन कईल जाला। पर्वतराज हिमालय के घर में अवतार ले ला के बाद दुर्गा माई शिव तत्त्व के प्राप्ति खातिर ब्रह्मचारिणी के स्वरूप धारण कईली आ घोर तप कईली। एक हजार बरिश तक खाली पतई चबा के रहली, एकरा बाद बिना पतई के यानी निराहार दस हजार बरिश तक तप कईली। देवता आ ऋषि सनक, सनातन आदि लोग समझावल कि इतना तप मत कर बेटी, अभी बहुते काच उमरि बा। ऊ लोग विष्णु भगवान से शादी के प्रलोभन देखावल लोग, बाकिर ऊ कहली कि शिवजी के ही पति हम मन से मान लेले बानी, हमार एकई लक्ष्य बा शिव तत्त्व। संसार के भलाई खातिर शिव तत्त्व बहुते जरूरी बा। अपना दृढ़ निश्चय आ घोर तप के बल पर ऊ शिवजी के प्रसन्न कर लेली आ उनकर अर्धांगिनी बन गईली।

नवरात के दूसरका दिन ब्रह्मज्ञान देवे वाली, संसार के कल्याण करे वाली दुर्गा जी के ब्रह्मचारिणी स्वरूप के पूजा आ ध्यान कईल जाला। आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान आ शिव तत्त्व प्राप्त करे खातिर दुर्गा जी के एही स्वरूप के आराधना, उपासना, ध्यान करे के चाहीं।

भक्ति, शक्ति, विद्या, आत्मज्ञान प्राप्त करे खातिर ब्रह्मचर्य व्रत के पालन कईल बहुते जरूरी ह। एकरा खातिर ब्रह्म मुहूर्त में जाग के शौच, स्नान आदि के बाद उचित आसन प बईठ के अनुलोम, विलोम, प्राणायाम कईला के बाद इनकर पूजा, ध्यान, जप करे के चाहीं। गंदा फिल्म, गंदा किताब, गंदा गीत आ गंदा संगति से दूर रह के दुर्गा सप्तशती के पाठ अपने से करे के चाहीं। जे अपने से ना पढ़ सकेला ऊ विद्वान आ संतोषी पंडित जी से पाठ करावे आ बईठ के ध्यान से सुने। एह समय में अभक्ष्य मांस, मदिरा, शराब, मछली से परहेज करे के चाहीं। दुर्गा सप्तशती के पाठ पढ़ीं, सुनी, गुनी आ सब लड़की, औरत के दुर्गा जी के रूप मान के आदर, सत्कार, सम्मान करीं। माई, बहिन, बेटी, भौजाई, भावह, दादी, नानी, आ अपना धर्मपत्नी के भी मानी, जानी आ नीमन से बोलीं, कड़वा बोली में कभी मत बोलीं।

हम अपना समाज में एह घरी देखत, सुनत, बानी, कुछ लोग अपना माई के गरिया देता, अपना मेहरारू के बिना कारण थप्पड़ चला देता, लतिया देता आ बिखिन - बिखिन गारी देता जेकरा के सुनि के लाज भी लजा जाई। ऊहो आदमी दुर्गाजी के पूजा करे के खूब नाटक, ड्रामा करत बा। सुधर जा लोग नाही त आतना दुःख होई कि आंख के लोर ना सूखी। मुअला के बाद नरक में भीषण यातना यमदूत दिहें।

कुछ लोग डेरात रहेला कि दुर्गा जी के मंत्र के गलत उच्चारण हो जाई त बहुते नुकसान होई

। ई डर मन से निकाल द लोग । माई भाव देखे ली, भक्ति देखे ली, नारी के प्रति तहरा दिल में कतना आदर बा, ई देखे ली। माई के पूजा डेरा के ना, भक्ति भाव से करऽऽ।

माई विंध्यवासिनी देवी के मंदिर में एगो पुजारी एगो भक्त के डांट दे ले, ऊ मंत्र के गलत उच्चारण करत रहले। तस्यै के जगहा प तस्मै बोलत रहले। ऊ डांटले कि तस्मै पुलिंग शब्द ह। ओ ही रात पुजारी जी के सपना में दुर्गाजी आ के एक चटकन जोर से मरली आ कहली,"आरे मूरख !, ते का जानत बाड़ीस कि हम खाली औरत हईं, आरे हम पुरुष भी हईं। हम माता पिता दुनो हईं। जा के हमरा भक्त से माफ़ी मांग।" ऊ पुजारी जी भक्त के घर पे जाके उनकर गोड़ पकड़ी के माफी मंगले।

माई के एगो मंत्र बोलि के परनाम करीं :

या देवी सर्वभूतेषु ब्रह्मचारिणी रूपेण संस्थिता।

नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।

तिसरका दिन : माई चंद्रघंटा

नवरात के तीसरा दिन दुर्गा देवी के चंद्रघंटा स्वरूप के पूजा, ध्यान, उपासना, आराधना कईल जालाक्ष। भगवान नारायण के मन में जब इच्छा भईल कि एगो से हम अनेक हो जायीं त उनका अंतःकरण से एगो बहुते तेज आवाज भईल। एकरा के विज्ञान में बिग बैंग Big Bang कहल जाला। ऊ ओंकार ध्वनि ह, ऊ आवाज आजुवो पूरा सृष्टि में गूंज रहल बा। योगी लोग ध्यान में ओ आवाज के सुने ला। रावा भी ध्यान करब त ओ आवाज के सुनि सकेनी। बुझाला कि मंदिर के घंटा एकबार बजाके केहू छोड़ देले बा आ ऊ अनवरत गूंज रहल बा।

ई ओंकार ध्वनि परमात्मा के सबसे निकटतम नाम ह। भगवान श्रीकृष्ण जी श्रीमद्भागवत गीता में अर्जुन से कहत बाड़े कि एक अक्षर मंत्र में हम ओंकार हईं। जे आपन तन छोड़त समय ओंकार के उच्चारण करी ओकर मोक्ष हो जाई। ऊ ईहो कहत बाड़े कि तू युद्ध भी करत रह यानी कार्य करत - करत भी श्वास - प्रश्वास के द्वारा ॐ के जप करत रह। वैज्ञानिक लोग गीता के उपदेश के मूल रूप से, भगवान श्रीकृष्ण जी के आवाज में ही सुने के प्रयास कर रहल बा लोग। काहे से कि आवाज, ध्वनि कभी नष्ट ना होला।

इहे ॐ ध्वनि भगवान शंकर जी के डमरू से गुंजेला। महर्षि पाणिनि जी डमरू के आवाज सुनि के चौदह सूत्र के रचना कईले। ऊ एह आवाज के सुनि के संस्कृत व्याकरण के रचना कईले। एही से संस्कृत के देवभाषा कहल जाला।

मां चंद्रघंटा देवी ही मंत्र हई, गीत, संगीत, छंद आ शब्द हई। कवि, लेखक, लोग के मन में उनके कृपा से, प्रेरणा से कविता, लेख, लघुकथा, कहानी, उपन्यास, काव्य, महाकाव्य के रचना करे के भाव आवेला।

मां चंद्रघंटा देवी के पूजा दुर्गा सप्तशती के विधि विधान से करे के चाहीं, बाकिर उनकर पूजा त हमेशा कईल जाला। उनकर पूजा कईला से हमेशा सुख, शान्ति, घर में समृद्धि, प्रगति, उन्नति होला। उनकर पूजा कईल बहुते आसान ह। हरे फिटिकरी कुछुओ नईखे लागे के। उनकर पूजा ह, हमेशा सांच बोलीं, मीठ बोलीं, तीत मत बोलीं, केहू के नुकसान वाली बात मत बोलीं, कचहरी में झूठ गवाही मत करीं, ज्यादा बकबक मत करीं। मंत्र सस्वर पढ़ीं, भजन, कीर्तन, सुमिरन करीं आ ॐ के जप करीं, ॐ के ध्वनि एकान्त, शांत वातावरण में ब्रह्मचर्य मुहूर्त में सुनीं। केहू के गाली मत दीं,

अपशब्द मत बोलीं। ओतने बोलीं जेतना अति आवश्यक होखे। फालतू गप - शप मत करीं। दूसरा केहू के शिकायत, निन्दा मत करीं। समय काटे खातिर केहू से मर मजाक मत करीं। इहे मां चंद्रघंटा देवी के असली पूजा ह।
मां चंद्रघंटा देवी के एगो मंत्र पढ़ीं:

या देवी सर्वभूतेषु चंद्रघंटा रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।

चौथा दिन : माई कूष्मांडा

चौथा दिन दुर्गा माई के कूष्मांडा स्वरूप के पूजा कईल जाला। ई ऊष्मा, ताप के स्रोत हई, तीनों ताप दैहिक, दैविक आ भौतिक से भरल पूरा संसार इनका उदर में समाहित बा। ई ब्रह्मांड के बीज के आगार, अंडा लेखा गोलाकार इनकर उदर ह। ऊष्मज, स्वेदज, अंडज, पिंडज, स्थावर, जंगम सब प्रकार के सृष्टि के मूल कारण ईहे हई। संतान के कामना से संतानहीन लोग भी इनकर उपासना, ध्यान, पूजा करे ला लोग। देवी एके हई, स्वरूप अलग अलग बा।

सब जीव जन्तु में भ्रूण के ई हे स्थापन करे ली। भ्रूण हत्या कईल घोर पाप हटे, जघन्य अपराध ह। भ्रूणहत्यारा के लाखों बरिश तक नरक भुगते के पड़ेला। बाकीर लोग के बुझाते नईखे। अल्ट्रासाउंड मशीन से पता लगा के अगर लड़की बिया पेट में तब खतम करा देता लोग। अईसन लोग के छुअल पानी ना पिए के चाहीं, ओहू में भारी दोष ह।

पूरा सृष्टि त माई दुर्गा जी के ही रूप ह, जाति, पांति , ऊंच, नीच के भेदभाव कईल बहुते बड़ पाप में गिनाई। आपस में मिलजुल के प्रेम से, संयम से, सहयोग के भावना आ निडर होके रहे के चाहीं। दुर्गापूजा शक्ति के पूजा ह आ शक्ति के असली पूजा शक्ति के संचय ह। शुद्ध शाकाहार में जवन शक्ति बा ओतना मांसाहार में नईखे। जीव जन्तु के मार के चाहे मरवा के खईला से आत्मा बहुते कमजोर हो जाई। आत्मशक्ति ना रही त तरह - तरह के बीमारी, रोग, भय शरीर में आ आसपास मंडरात रही। माई, दुर्गा माई जवन लिखवावत बाड़ी , हम लिखत बानी, नाही त हम लेखक, कवि ना हई। शाकाहारी बनीं, सदाचारी बनीं। माई के एगो मंत्र पढ़ीं:

या देवी सर्वभूतेषु कूष्मांडा रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।
माई भक्तन प अपना तू खियाल रखीह।
सुख, शांति, सद्बुद्धि दे के निहाल रखीह।।

।। ऐं ह्रीं क्लीं कूष्माण्डायै नमः।।

पांचवां दिन : माई स्कंदमाता.

नवरात के पांचवां दिन स्कन्द माता के पूजा, अर्चना, ध्यान आ उपासना कईल जाला। ई माई के वात्सल्य से भरपूर, सद्गुण के भंडार आ करुणा के अवतार ह। देवता लोग, आ संत, सज्जन लोग के

भलाई खातिर माई एगो तेजस्वी, पराक्रमी, वीर, निर्भीक, युद्धविद्या में पारंगत, कुशल सैन्य संचालन करे वाला सुपुत्र के अपना तेजोमई अंग से अवतरित कईली। उनकर नाम स्कन्द आ कार्तिक मास में अवतरित भईला के कारण कार्तिकेय रखली। देवराज इंद्र उनका के तुरन्त देव सेनापति नियुक्त कर दे ले।

माता अगर शक्तिशालीनी, वीरांगना, ओजस्विनी, तेजस्विनी, युद्धप्रवीणा होई त निश्चित रूप से संतान भी ओसही होई। दुर्गाजी के ई नौ अवतार क्रमिक रूप से चेतना शक्ति के उत्तरोत्तर शक्तिमति होखे के, कल्याणमई आ करुणामई होखे के स्वरूप ह।

जब शंकर भगवान माता पार्वती जी से पूछले कि संसार के कल्याण खातिर सबसे सुगम आ सबसे सुलभ कवन उपाय बा, त उ बतवली कि अम्बे स्तुति। स्कन्द माता, माई के पूर्णावतार ह।

सब माई के ई दायित्व बा कि ऊ अपना संतान के लोक कल्याण करे वाली शिक्षा देसु। ऊ अपना संतान के अच्छा संस्कार देसु। एकरा खातिर उनुको स्कन्द माता लेखा बने के कोशिश करे के पड़ी। माई के एह रूप के पूजा निर्मल मन से करे के पड़ी। माई त्याग, तप, सुसंस्कार, सुशिक्षा से सुसज्जित रहीहें तब ही ऊ अपना संतान के ओइसने बना सकीहें।

राजा सुरथ के राज्य संपूर्ण पृथ्वी पर रहे। उनकर शत्रु उनका राज्य पर आक्रमण कर देलेस आ युद्ध में हरा देलस। ऊ भाग के बलिया के शंकरपुर के जंगल में लुक छिप के रहे लगले। एक दिन ऊ मेधा ऋषि के आश्रम में पहुंचले। ऋषि घोर तपस्या में रत रहले। कुछ देर के बाद समाधि नाम के बनिया ओही आश्रम में पहुँचल। ओकरा घर के लोग ओकर सब धन लेके घर से भगा देले रहे। मेधा ऋषि पूजा, ध्यान से उठ के ओ लोग से समाचार पूछले। ऊ लोग रो रो के आपन दुखड़ा सुनावल। मेधा ऋषि ओ लोग से दुर्गाजी के पूजा करे के कहले। कुछ दिन माई दुर्गा के पूजा कईला के बाद राजा सुरथ अपना शत्रु राजा पर आक्रमण कईले आ युद्ध जीत गईले। उनकर पूरा राज्य फेर से मिल गईल। समाधि बनिया के घर के लड़का, पतोह ढूंढते उहंवा आईल, क्षमा मांग के घर चले के निहोरा कईल बाकिर उनका वैराग्य हो गईल रहे, ना गईले। उनकर मोक्ष हो गईल। दुर्गाजी के पूजा कईला से सबकुछ मिल जाला।

राजा सुरथ शंकरपुर में शांकरी देवी आ हनुमानगंज में ब्रह्माईन देवी के मंदिर बनववले। ऊ सुरहा ताल खोदववले ताकि किसान के खेती, सिंचाई में एकर उपयोग हो सके। बलिया पृथ्वी पर सबसे पवित्र भूमि ह। दुर्गासप्तशती एह जगह पर ही लिखाईल।

दुर्गाजी के एगो मंत्र पढ़ीं:
या देवी सर्वभूतेषू स्कन्द माता रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।

छठवां दिन : माई कात्यायनी

जब दैत्य, दानव साधु, सन्त, ऋषि, महात्मा, सज्जन आ देवता लोग के सतावे लगलेस तब महर्षि कात्यायन जी देवी दुर्गा के आराधना, प्रार्थना, पूजा आ आवाहन कईले। उनका आश्रम में ऊपर आकाश मार्ग से भगवान भास्कर के किरण पुंज के साथ नन्हीं बालिका के रूप में देवी दुर्गा अवतरित भईली। कात्यायन ऋषि उनका के अपना बेटी लेखा मानि के उनकर सेवा, भक्ति, पूजा आ

आराधना कईले, एह से उनकर नाम कात्यायनी हो गईल । दुर्गा पूजा के सातवां दिन इनकरे पूजा कईल जाला।

मां कात्यायनी देवी षष्ठी देवी के रूप में भी डाला छठ के दिन धूमधाम से पूजल जाली। ई सन्तान, सुख, शान्ति, समृद्धि, स्वास्थ्य आ यश प्रदान करे वाली हई।

गोकुल, वृन्दावन में गोपी सब कृष्ण भगवान के प्रसन्न करे खातिर, उनकर अनन्य भक्ति प्राप्त करे खातिर मां कात्यायनी देवी के विधि विधान से पूजा आ उपासना, व्रत कईलीं तब ओ लोगन के मनोकामना पूरा भईल । कृष्ण भगवान मां कात्यायनी के कृपा से गोपी लोग के योग, प्रेम योग, भक्ति योग आ आत्मज्ञान दे के कृतार्थ कईले । कात्यायनी देवी आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान के भी अधिष्ठात्री देवी हई।

मां कात्यायनी के पूजा पूरा निष्ठापूर्वक श्रद्धा भाव से कईला प ऊ बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाली। साधु, सन्त लोग इनकर ध्यान वैराग्य आ भक्ति बढ़ावे खातिर करेला लोग । विद्यार्थी ज्ञान अर्जित करे खातिर इनकर पूजा करे ले।

दुर्गा मईया के कात्यायनी स्वरूप के पूजा कईला प सब नीमन कामना बहुते शीघ्र पूरा हो जाला। इनकर पूजा निर्मल मन से, पवित्र भाव से आ सब नारी समाज के प्रति आदर, सम्मान, स्नेह भाव से करे के चाहीं। नारी के प्रति कुदृष्टि वाला लोगन के ई शीघ्र विनाश कर देली।

आईं, माई के मंत्र पढ़ीं:

या देवी सर्वभूतेषु कात्यायनी रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।
हे मां, संतानदात्री, संत रक्षिका, आत्मज्ञान दायिनी।
हे जगमाता, कात्यायनी रूपा, द कृष्णभक्ति अनपायनी।।

सातवां दिन : माई कालरात्रि

नवरात के सातवां दिन मां कालरात्रि देवी के पूजा, अर्चना, उपासना, ध्यान कईल जाला। सूरज भगवान के किरिन लेखा बिखरल, खुला केश ह इनकर आ उनूके लेखा प्रचण्ड गरमी, ताप, ऊष्मा इनका एह स्वरूप में बा। ई माई कालरात्रि देवी काल के भी काल हई, महाकाल के स्वामिनी हई।

जब विष्णु भगवान चातुर्मास में क्षीरसागर में सुतल रहले तब उनका कान से दु गो दैत्य मधु आ कैटभ उत्पन्न हो गईले स आ ब्रह्मा जी के भकोसे खातिर आपन विकराल मुंह फैला के उनका लगे आवे लगले स। ब्रह्माजी विष्णु भगवान के प्रार्थना कईले, विनती कईले, आपन जान बचावे खातिर गिड़गिड़ईले त विष्णु भगवान के आंख से एगो तेज निकलल, ऊ महाकाली के अवतार रहली। विष्णु भगवान जाग गईले आ ओ दुनो के मारे खातिर युद्ध कईले। पांच हजार बरिश तक भयानक लड़ाई भईल। महाकाली, महामाया ओकनी के मति फेर देली। ऊ विष्णु भगवान से कहलेस कि तोहरा वीरता से हम प्रसन्न बानी, वरदान मांग ल। विष्णु भगवान हँसके कहले कि हमरा से तहन लोग मरा जा। ऊ कहलेस, "एवमस्तु"। विष्णु भगवान महाकाली के प्रेरणा से ओकनी के चक्र सुदर्शन से काट दे ले।

मां कालरात्रि शुंभ दैत्यराज के सेवक भयंकर राक्षस चण्ड, मुंड, धूम्र लोचन, रक्तबीज आदि

असंख्य दैत्यन के संहार कईली।

मां कालरात्रि अपना भक्त लोगन के अकाल मृत्यु से बचावेली, रक्षा करेली। ई दुर्गति नाशिनी, भक्त भय हारिणी आ मंगलकारिणी हई। ई दैत्यन के आतंक के निर्मूल समाप्त कर देली।

पूरा विश्व में आतंकवाद बढ़ गईल बा। आतंकवाद तब खतम होई जब नारी शक्ति के जागृति होई। जब घर घर मां दुर्गा, महाकाली, चंडिका देवी के कल्याणी स्वरूप लेखा हर नारी शक्तिशाली, विवेकशालिनी, अभया आ वीरांगना बनिहें तब आतंकवाद समाप्त होई। आतंकवादी जाति, मज़हब के नाता जोड़ के लोगन के घर में छिप जाले स, औरत लोग क्रूर पुरुष के सामने चुप्पी साध लेला, एही से आतंकवाद बढ़त बा। जब औरत मानवता के रक्षा खातिर जागरूक होईहें, मां कालरात्रि लेखा आतंकवादियन के काल बन के हथियार उठईहे तब आतंकवाद समाप्त हो जाई।

माई कालरात्रि के बलिदान चाहीं, अपना बुराई के, दुष्टता के, दुर्व्यसन के, भ्रष्टाचरण के, आपसी कटुता के, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कामवासना, क्रोध, भय, लोभ आ अहंकार के बलिदान हमनी के करीं जा, तब माई प्रसन्न होईहें।

माई के एगो मंत्र पढ़ीं:
या देवी सर्वभूतेषु कालरात्रि रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।

आठवां दिन : माई महागौरी

नवरात के आठवां दिन दुर्गा मईया के महागौरी स्वरूप के पूजा, उपासना, ध्यान, प्रार्थना आ अर्चना कईल जाला। माई के ई रूप उज्ज्वल, धवल चांदनी लेखा अनुपम सुन्दर, अत्यधिक गौर वर्ण के ह। महागौरी मईया दया, करुणा, स्नेह, वात्सल्य के प्रतिमूर्ति हई। औरत अखण्ड सौभाग्य खातिर इनकर आराधना, पूजा करे ली स। कुंवारी कन्या सुन्दर आ सुयोग्य वर खातिर इनकर व्रत, प्रदोष व्रत करे ला लोग। जनक राजदुलारी जब पुष्प वाटिका में रामजी के रूप, लावण्य के देखली त महागौरी देवी के दुबारा पूजा करे आ विनती करे गईली। एक बेर ऊ इनकर पूजा कर लेले रहली। महागौरी की मूरत मुस्काए लागल आ उनका बुझाईल कि ई कहत बाड़ी कि तोहार मनोकामना जरूर पूरा होई।

हरितालिका व्रत महागौरी मईया के पूजा, उपासना के व्रत ह। गणेश चतुर्थी यानी चउथ व्रत में गणेशजी के संगे महागौरी पूजा ही कईल जाला। ये दुनो व्रत के दिन औरत अपना पति के दीर्घायु के मनोकामना से, अपना अखण्ड सौभाग्य खातिर ही महागौरी के व्रत, पूजा करे ला लोग।

महागौरी अपना भक्त, भक्तिनी के दुःख, दरिद्रता, विपत्ति, रोग के दूर करे ली आ सुख, शांति, समृद्धि, आ स्वास्थ्य प्रदान करे ली।

माई के पूजा व्रत जे निस्वार्थ भाव से, निष्काम भाव से करे ला, ओकर सब मनोकामना ई बिना कहले पूरा कर देली। माई सर्वव्यापक हई, सर्वद्रष्टा हई आ सर्वशक्तिमती हई, इनकर पूजा निर्मल मन से करीं, ई सब मनोकामना निश्चित पूरा करिहें। प्रार्थना आ पूजा में मांग कईल छप्पन भोग में दु बूंद किरासन के तेल डालला लेखा ह, मांगते सब पूजा पाठ बेकार हो जाला। पूरा सृष्टि

इनकरे रूप ह, ई सब के मन के बात जाने ली।

माई के एगो मंत्र पढ़ीं:
या देवी सर्वभूतेषु महागौरी रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।

ये माई तोहरा से सुन्दर, नईखे त्रिलोक में कोई।
ना अबहिं बा केहू सुन्दर, ना आगे केहू होई।।
तू करेलू सिंह सवारी, सब दैत्यन के तू मारेलू।
करुणा कईके माई, तू भक्तन के भगिया संवारेलू।।
तू ही सब नारी लोगन के देलू सोहाग अखण्ड।
नारी के जे अपमान करेला, ओकरा के देलू दण्ड।।
हम करीं तोहार पूजा मईया नईखे कुछ आधार।
भक्ति, ज्ञान, मुक्ति देके, माई नईया लगाव पार।।

नौवां दिन : माई सिद्धिदात्री

नवरात के नौवां दिन माई सिद्धिदात्री के पूजा कईल जाला। आठ दिन पूजा, व्रत कईला के बाद नौवां दिन माई अपना भक्त, भक्तिनी के सब मनोकामना पूरा होखे के वरदान देली। ई सब सिद्धि के देवी हई, सिद्धिदात्री हई। ई पूर्णता के स्वामिनी हई। नौ दिन कठिन तप, व्रत, उपासना, ध्यान, भजन, मंत्र जप कईला के बाद ई कार्य सिद्धि के, मनोकामना पूरा होखे के आशीर्वाद देली। ई आठों सिद्धि आ नवों निधि के दाता हई।

माई सिद्धिदात्री पूर्ण ब्रह्म के, अक्षर ब्रह्म के अधिष्ठात्री देवी हई। सम्पूर्ण सृष्टि के आदि कारण ईहे हई। दृश्य आ अदृश्य रूप से पूरा विश्व इनकरे स्वरूप ह। नारायण की शक्ति, नारायण की आत्मा नारायणी ईहे हई। नौ दिन के रावा सभे के अनुष्ठान पूरा भईल। पूजा, उपासना, ध्यान के समय सीमा में ना बांधे के चाहीं। हर दिन पूजा करीं, ध्यान करीं आ सबसे बड़ बात अपना जननी के, माई के, घर, बाहर, पास पड़ोस, सब जगह नारी के इज्जत, आदर, सम्मान, सेवा, सहयोग करीं, दुर्गा माई के असली पूजा ईहे ह। वो पूजा पाठ के नकली नईखी कहत बाकिर नारी के सम्मान चाभी ह जवना से माई के मंदिर के कपाट खुल जाला आ माई साक्षात् आपन दर्शन देली।

माई के एगो मंत्र पढ़ीं:
या देवी सर्वभूतेषु सिद्धिदात्री रूपेण संस्थिता।
नमः तस्यै नमः तस्यै नमः तस्यै नमो नमः।।

भगवती प्रसाद द्विवेदी

सर्जना, सृजनशील कालोनी, बिस्कुट फैक्ट्री रोड,
निकट मगध आईटीआई, नासरीगंज, दानापुर,
पटना - 801 503 (बिहार)
दूरभाष- 9304693031

भगवती प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

पुण्य तिथि (19 मई) पर खास

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : अगाध विद्वता आ हँसोड़ शख्सियत के बेजोड़ समन्वय भगवती प्रसाद द्विवेदी

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के नाव सुरता प चढ़ते एगो अइसन भोजपुरिया शख्सियत सोझा आवेला, जे मन-मिज़ाज से जतने हँसोड़ आ मनोविनोद से भरल - पुरल रहे, लेखन आ अभिभाषण में ओतने गम्हीर आउर अगाध विद्वता से लबरेज़ रहे । भोजपुरिया लोगन से ठेठ भोजपुरी में बतिआवल आ बात - बात में हाजिरजवाबी से ओतप्रोत ठहाका लगावल उहॉ के सुभाव रहे । कहल जाला कि एक बेरि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी जब बलिया के हजारी प्रसाद द्विवेदी के रिगावत कहनीं कि बलिया के लोग त बलियाटिक (गँवार) होला, त द्विवेदी जी तुरंते जवाब देले रहनीं - 'बाकिर चिरगांव के लोगन नियर चिरगँवार ना होला !' (मैथिलीशरण जी चिरगांव के रहेवाला रहनीं ।)

सादगी भरल पहिरावा आ हास - परिहास से ओतप्रोत व्यक्तित्व देखिके सहजे बिसवास ना होत रहे कि ई उहे शख्सियत ह, जे 'बाणभट्ट की आत्मकथा' आ 'पुनर्नवा' जइसन बेजोड़ उपन्यास लिखल, 'अनामदास का पोथा', 'चारुचंद्रलेख' के सिरिजना कइल आ 'हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका',
'कबीर', 'सूर साहित्य', 'साहित्य का मर्म',
'विचार और वितर्क','विचार प्रवाह', 'नाथ संप्रदाय', 'कल्पलता', 'अशोक के फूल', 'मृत्युंजयी रवीन्द्रनाथ' वगैरह जइसन पचासन ग्रंथन के सिरिजना क के इतिहास रचनीं, पृथ्वीराज रासो आ संदेश रासक के संपादन कइनीं, संगें - संगें 'प्रबंध चिन्तामणि',
'विश्व परिचय' लेखा अविस्मरनीय अनूदित ग्रंथो रचनीं।

तबे नू बलिया जिला में सन् 1907 में जनमल द्विवेदी जी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सानिध्य में 1930 से 1950 ले शांति निकेतन में ना खाली हिन्दी के अध्यापन कइनीं, बलुक गहिर स्वाध्याय के बूता पर अमर कृतियन के सिरिजना से देश - दुनिया में मशहूर हो गइनीं। गुरुदेव के नेह - छोह उहां के हरदम मिलत रहल आ ताजिनिगी (निधन :19 मई, 1979) शांति निकेतन के बाद 1950 से 1960 ले काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष,

काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, 1960 में चंडीगढ़ विश्वविद्यालय के अध्यक्ष, 1968 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 'रेक्टर' आ उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष, फेरु कार्यकारी अध्यक्ष के पद के सुशोभित कइनीं। भोजपुरी में त उहां के मने रमत रहे। एही से सन् 1973 में जब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन भइल आ ओकरा दोसरा अधिवेशन के अध्यक्ष आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के बने के निहोरा कइल गइल, त उहां के खुशी - खुशी संकारि लिहनीं आ पटना में जब उहां के अध्यक्षता में अधिवेशन भइल, त लाखन लोगन के बेसम्हार भीड़ सुने खातिर ठकचल रहे आ भोजपुरी में उहां के भासन तमाम सुननिहारन के अभिभूत कऽ देले रहे।

बाकिर आचार्य जी के दैहिक अवसान का बाद बलिया से बत्तीस किलोमीटर पुरुब बनारस - छपरा रेललाइन प 'सुरेमनपुर' रेलवे स्टेशन के एगो बोर्ड हमरा के चकित कऽ देले रहे। बोर्ड पर एगो सरकारी विज्ञप्ति दर्ज रहे - 'हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ निबंधकार, उपन्यास लेखक एवं समीक्षक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्मस्थान ग्राम दुबेछपरा यहांँ से आठ किलोमीटर पश्चिम में है। इनका जन्म सन् 1907 में हुआ था।'

दुबेछपरा बलिया जिला के एगो बड़हन गांव ह, जहवांँ कालेज वगैरह सब कुछ बा, बाकिर द्विवेदी जी के जनम त बलिया - बैरिया सड़क मार्ग पर ओझवलिया गांव के एगो टोला आरत दुबे के छपरा में भइल रहे, जवना के लोग दुबेछपरा बूझि लेले रहे आ ई भूल पाठ्यपुस्तको में लउकत रहे। हम ओह घरी के सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका 'धर्मयुग' में लिखत रहलीं। हम संपादक डॉ. धर्मवीर भारती के नांँव से एह विषय में एगो चिट्ठी लिखलीं। उहांँ से तुरंत एगो तार आइल कि हम फटाफट दूनों गांँव के दौरा करीं आ फोटो का संगें एगो आलेख तेयार कऽके भेजीं।

दिसम्बर, 1985 में पहिले हम बड़का गांँव दुबेछपरा के इंटरमीडिएट कालेज के अध्यापकन से भेंट कइलीं। ऊ लोग एक सुर में कहल - 'द्विवेदी जी प शोध करेवाला कई लोग भूलत - भटकत इहवांँ आ जाला। सुरेमनपुर स्टेशन पर रेल महकमा गलत बोर्ड लगववले बा। दरअसल ई बोर्ड बलिया स्टेशन पर लागे के चाहीं, काहेंकि आचार्य जी के जनम स्थान ई दुबेछपरा ना, आरत दुबे के छपरा ह, जवन बलिया से बारह किलोमीटर पुरब बस मार्ग प ओझवलिया गांँव के बगल में बा। आरत दुबे के छपरा के संक्षिप्त करत - करत लोग दुबेछपरा मानि लेले बा। बाकिर हमनीं खातिर त निमने बा कि बोर्ड पढ़ेवाला लोग एही गांँव के द्विवेदी जी के जन्मस्थल मानत रहो आ एही बहाना एह गांँव के नांँव रोशन होत रहो।'

अब हम बस से बसरिकापुर ढाला का लगे उतरिके एगो पान के दोकान में जाके पूछताछ करे लगलीं। संगें रहलन संघतिया विनय बिहारी सिंह आ श्रीप्रकाश। बुढ़ऊ के आंँखि में चमक आ गइल - 'अच्छा ! हजारी बाबा के गांँवें जाइबि सभे ? उहांके त एही बसरिकापुर मिडिल स्कूल में पढ़ल रहनीं।'

ऊ राह बता दिहलन। हमनीं के दक्खिन का ओरि जाएवाली पगडंडी पर आगा बढ़े लगलीं जा। बसरिकापुर का बाद परेला ओझवलिया। ओही मौजा के एगो टोला आरत दुबे के छपरा बगले में बा

।

गांँव में ढेर पलानी, माटी के घर आ किछुए पक्का मकान लउकत रहे। पूछत एगो खपरैल घर का सोझा पहुंचलीं जा। ऊहे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मकान रहे। घर में से बहरी आके दिनेश कुमार द्विवेदी, जे आचार्य जी के भतीजा रहलन, बतावे लगलन - 'आचार्य जी के बाबूजी दू भाई रहलन - अनमोल दुबे, जगन दुबे। अनमोल दुबे के चार गो बेटा रहलन -

हजारी प्रसाद द्विवेदी, रमानाथ द्विवेदी, पृथ्वीनाथ द्विवेदी, रवीन्द्रनाथ द्विवेदी। जगन दुबे के दूगो बेटा विश्वनाथ द्विवेदी, नवनाथ द्विवेदी में से खाली नवनाथ द्विवेदी के परिवार गांव प रहेला। हमनीं के पुरखा आरते दुबे ई टोला बसवले रहलन। चाचा के परिवार बनारसे में रहेला। आनंद भैया आ जगदीश भैया कबो - कबो गांँवें आवेला लो। चाचा के तीनों बेटी पुतुल, तितिल आ मुन्नी अपना - अपना परिवार का संगें अलगा - अलगा शहर में रहेली।'

हमनीं के बतकही सुनिके बगल के मकान में से सुरेश कुमार दुबे बहरी आके कहे लगलन - 'उन्हुका से मिलला प कबो अइसन लागते ना रहे कि ओतना महान शख्सियत से मिलि रहल बानीं। ऊ हरदम हमनीं के हंँसावत - हंँसावत ई बात जरूर कहसु कि जिनिगी में जदी किछु करेके बा, त दू चीज से दूर रहऽ - सुरा आ सुन्नरी से।'

पचहत्तर बरिस के दलित परिवार के नगीना आगा बढ़ला पर बतावे लगलन - 'हजारी बाबा! ओइसन भलामानुस त आजु ले एह गांव में दोसर ना जनमल। उन्हुका भइला पर छठिआर में निनिअउरा शंकरपुर मझौली से खुशहाली में हजार रुपया मिलल रहे, एही से उन्हुकर नांव हजारी रखाइल रहे। पढ़े में बड़ा तेज रहलन ऊ। एही झगांँठ बर के गांछी का नीचे बइठि के ऊ पढ़ाई करसु। पहिले इहे उन्हुकर घर रहे, बाकिर एक बेरि घर प गिद्ध बइठि गइल, त ऊ लोग घर छोड़िके अलगा मकान बना लिहल। फेरु ओही जमीन पर हमनीं के बसि गइलीं जा।'

गांव के परधान राम प्रीति पाण्डेय जी से जब भेंट भइल, त उहांके आत्मीय भाव से कहे लगनीं - 'हम कोलकाता में नोकरी करत रहलीं। उहांँके जब कबो व्याख्यान देबे भा बेटी - दामाद से मिले जाईं, त हम उहां से मिले जरूर पहुंचि जात रहलीं। भेंट होते उहांके पहिले गांँव के हालचाल पूछीं आ भोजपुरिए में बतिआईं। भोजपुरी बोलीं, त अइसन ठेठ भोजपुरी कि सुनिके हम चकित रहि जाईं। ओहू में बीच - बीच में हास - व्यंग के पुट !बुझइबे ना करे कि शास्त्री, शास्त्राचार्य, विश्वभारती के संपादक, टैगोर पुरस्कार आ केन्द्रीय साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त विद्वान बोलत बा। गांवें चले के कहीं, त उहांँके मायूस हो जाईं। कहीं - का जाईं! गांव के समाज आजुकाल्ह ठीक नइखे। बाकिर गांँव का प्रति उहां के अनुराग में कमी ना रहे। एक - एक अदिमी के हाल पूछीं', फेरु पुन्न तिथि (19मई, 1979) के इयाद करत पाण्डेय जी आंखि पोंछत कहनीं, 'आखिरी समय अस्पताल में जब सुई लागे, त उहांके नोकर से कहीं - बहादुर, ई भोंका - भोंकी कब ले चली ? हम त उबिया गइल बानीं। परान छूटे के किछुए छन पहिले शिव प्रसाद सिंह उहांके मुंह से सुनले रहलन - कतनो मनावत बानीं, ई अहिरा सवाले नइखे सुनत ! अहिरा से उहांँके आशय साइत सिरीकिसुन भगवान से रहे

।उहांके बेटी तितिल (मालती तिवारी) के त छव महीना पहिलहीं मउवत के आभास हो गइल रहे, जब खात खा द्विवेदी जी कहले रहनीं कि ई भातवा बड़ा तींत लागत बा । ऊ अपना संस्मरण में लिखले रहली कि ऊ एगो बांग्ला उपन्यास में पढ़ले रहली - जै दिन उन्नी बल्लेन जे चालेर भात तेतो लागछे शेई दिनइ आमि बुझे गेछी जे आर छ मास कि नौ मास तार आयु । (जहिया ऊ कहलन कि भात तींत लागता, तहिए हम बूझि गइलीं कि इन्हिकर उमिर अब छवे भा नौ महीना बांचल बा ।)'

ओझवलिया बजार में पान के गुमटी में बइठल रामचंद्र दुबे के उहाँ के लोग वाजपेयी जी कहत रहे । ऊ पान लगावत कहे लगलन - 'विलक्षण व्यक्तित्व रहे आचार्य जी के । एक बेरि दाढ़ी बनावत खा उन्हुकर बेटी पुछली - बाबूजी, नोह काहें बढ़ेला ?फेरु त उहांके एगो निबंधे लिखि दिहनीं - 'नाखून क्यों बढ़ते हैं ?' उहांके उपन्यास 'पुनर्नवा' के किछु लाइन त हमरा आजुओ इयाद बा - शोभा और शालीनता की उपेक्षा करने वाले मनुष्य नहीं, असुर हैं । शोभा और शालीनता का जो आदर करते हैं और उसकी रक्षा करने में असमर्थ हैं वे कापुरुष हैं । देवता ! जो शोभा और शालीनता का सम्मान करना नहीं जानते, उन्हें सम्मान करने की बुद्धि दो और जो सम्मान करना जानते हैं, उन्हें उनकी रक्षा करने की शक्ति दो ।'
दुबे जी दुखी मन से कहत बाड़न - 'सउंसे गांव जड़ हो गइल बा, चेतना त कतहीं लउकते नइखे । ओतना महान विभूति के एह गांव में नामो - निशान नइखे बांचल । उन्हुका नांव प ना कवनो साहित्यिक संस्था, ना शिक्षण संस्थान भा पुस्तकालय - वाचनालय । अपने गांव में बेगाना हो गइलन हमार हजारी ।'

बसरिकापुर ढाला पर जयनारायण पाण्डेय जी के दर्शन भइल रहे । पटना के भिखना पहाड़ी मोहल्ला में रहिके पाण्डेय जी 'वाचाल बांकीपुरी' के नांव से लिखत रहलन आ 'किशोर' नांव के पत्रिका के सह - संपादन करत रहलन । ऊ बतावे लगलन - 'हमरा आग्रह पर 'किशोर' पत्रिको खातिर ऊ लिखले रहलन - 'कथक' शीर्षक से अनुप्रेरक कथा आ पंडित राम दहिन मिश्र के निधन का बाद श्रद्धांक में संस्मरण । बड़ा

हंसमुख आ अक्खड़ सुभाव रहे उन्हुकर । जोरदार ठहाका लगावत रहलन । चाउर, सांभर आ ढोसा उन्हुका नीमन लागत रहे । एक हाली जब ऊ उहां पहुंचलन, त रोज सबेरे नाश्ता में हलुआ दिआत रहे । लवटिके चिट्ठी में ऊ पता में जोड़ि दिहलन - हलुआ रोड ! बाद में पता चलल कि हलुआ उन्हुका नीमन ना लागत रहे । उन्हुका उहांँ पहुंचते हम बीस रुपया के पान कीनिके सोझा धऽ दिहलीं । एगो साथी व्यंग्य करत कहलन - एही से पता चलत बा कि रउआ बलिया के हईं ! द्विवेदी जी मुसुकी काटत कहलन - हमरा से एगो सज्जन सवाल कइलन कि कवन ऊ खाद्य बा, जवना के कतनो खा, बाकिर पेट ना भरे ? त हम जवाब दिहलीं - पान !'

"देश के हालात पर द्विवेदी जी के का विचार रहे ?" सवाल सुनते पाण्डेय जी बतावे लगलन - "आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एगो कथा सुनावत रहलन - एगो राजा जब मउवत का बाद चित्रगुप्त के दरबार में गइल, त सभ लोग ओकरा पाप - पुन्न के लेखा - जोखा देखिके दंग रहि गइल । ना त ऊ पाप कइले रहे, ना पुन्न । भला ई कइसे हो सकेला ? पुछला पर राजा के जवाब रहे - 'महाराज, हम एगो

पुन्न जरूर कइले बानीं। एक हाली एगो संत महल में अइलन। हौज में पंवरत मछरियन के देखिके ऊ खिसिया गइलन आ उन्हनीं के तालाब में छोड़वा देबेके हिदायत दिहलन। ओही घरी हम मछरियन के आजाद कके ताल में छोड़वा देले रहलीं।' एह पर चित्रगुप्त कहलन, 'राजा! तूं त मछरियन के आजाद कऽ दिहलऽ, बाकिर उन्हनीं के एह आजादी के एहसास ना भइल आ ऊ आजुओ तालाब के हौजे बूझिके सीमित दायरा में पंवरत बाड़ी स!' राजा के आतमा आजुओ भटकत बा।"

वापिस लवटिके हम आलेख लिखलीं आ मए फोटो का संगें भेजि दिहलीं।ऊ आलेख 'धर्मयुग' साप्ताहिक के 16फरवरी, 1986 अंक में प्रमुखता से प्रकाशित भइल।

बाकिर बात इहंवें खतम ना भइल। दू महीना बाद 'धर्मयुग' के नया अंक में 'बाॅक्स' में दूगो चिट्ठी छपली स।शीर्षक रहे - 'वाकई असर हुआ'। एगो पत्र बलिया के जिलाधिकारी के रहे आ दोसर ओझवलिया गांव के ग्रामप्रधान के। ओह में ई सुखद सूचना रहे कि हजारी प्रसाद द्विवेदी के जनम स्थान के गलती के दुरुस्त कऽ दिहल गइल बा आ सुरेमनपुर स्टेशन से बोर्ड उखाड़ि के सही जगहा बलिया रेलवे स्टेशन आ बसरिकापुर ढाला पर लगवा दिहल गइल बा आ एह खातिर पत्रिका के संपादक आउर लेखक का प्रति आभार व्यक्त कइल गइल रहे।

आजुओ गांवें जात खा जब हम बलिया रेलवे स्टेशन प आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से जुड़ल बोर्ड के देखलीं, त मए दास्तान सुरता प नाचे लागेला आ आचार्य जी के सुनावल कथो मन परे लागेला। ओह मछरियने लेखा कब ले हमनीं के सीमित दायरा में पंवरत रहबि जा ?कब होई हमनीं के सही माने में आजादी के एहसास ? आखिर कब ले भटकत रही राष्ट्र - आत्मा ?

डॉ. सुशीला ओझा

पूर्व विभागाध्यक्ष

हिन्दी विभाग,

माहेश्वनाथ महामाया महिला महाविद्यालय

पश्चिमी चम्पारण- बिहार

डॉ. सुशीला ओझा

बनारस वाली मईया

बनारस वाली मइया के नईहर बड़ा समभरांत रहे..। सात भाई के एगो दुलरी बहिनिया रहली । बाबा चीफ इंजीनियर रहलें । ओ घरी चीफ इंजीनियर एके गो रहत रहे..! पटना , बनारस, गाजीपुर , नखलऊ कांहा - कांहा उनकर मकान आ जमीन ना रहे.. ! गांव जवार सब चनसेखर बाबा से खुस रहत रहे.. आ काहे ना खुस रहो.. ? जेतना कमईले ओतने दीन दुखिया के मदद कइलें..। केहु के बेटी के बिआह में, बेमारी - सेमारी में... नोकरी - चाकरी में, गांव के सड़क बनाई में । गांव के कौनो बिकास में चनसेखर बाबा देह से रोपेया - पइसा से करत रहस..। गांव के लोग के बिसवास रहे कि कौनो संकट में पड़ जाईल जाई त एगो संकटमोचन बाड़े नु..!! हमनी के भगवान..!! सब लोग बाबा के संकटमोचन कहे..।समाजिक आदमी रहलें..। कौनो बेरा उनका दुआर पर केहु जाए.. कौनो कामना ले के.. सबकर कामना पुरन हो जाय..। सभे हंसत बोलत उनका दुआर से आए..। सबका मुंह से इहे निकले - "सादा बनल रहे इ दरबार !"

बड़ी तपेसया आ अरदास बाबा कइलें त एगो धिया जनमली । बाबा कहस - धिया के जनम लेले पवितर होईहें आंगना, जांघे जोर करब कनयादान !" बाबा के बाड़ा खुसी भइल । बाबा के खुसी माने गांव के खुसी..। बानारस वाली मइया के जलम चइत नवरात्र के अठमी के दिने भईल..। छाछाते दुरगा माई के अवतार बाड़ी..। नाम धराईल 'गउरा' । मइया कहेली - हम खूब गोर रहनी..। दूध खनिया झकझक - दपदप चमकत रहनी..। कहे लोग की एतना पातर हामार चाम रहे कि सीसा खनिया झलके । कबो पान खिआवे लोग त पान के पीक नटी में से लाल - लाल लउके..।

बाबा चीफ इंजीनियर रहलें ..माने घुस ना लेस । ईमानदारी के पईसा घर में आए...। बाबा भगउती के उपासक रहलें..। बिना भगउती के उपासना कइले कौनो काम ना करस..। उनका मन में बाड़ा साध रहे..कि एतना तपेसया पर बेटी भइल बाड़ी त.. सुध कनयादान कइल जाई..! गांव के दु तीन कोस पर हरदिया गांव के जमींदार किंहा 'गउरा' के बिआह ठीक भइल..। बाबा.. जेकरा दुआर पर जास उ आपना के भागसाली बुझे..। धन हो गइल दुआर कि चीफ इंजीनियर साहेब दुआर पर आइल बानी । हमनी के धन - धन भाग ..!

सियाराम सरन जी के बेटा आसुतोस से गउरा के बिआह ठीक भइल..। हजारन बीगहा जमीन, हाथी - घोड़ा दुआर पर.. तीन ताला मकान आ ए के गो बेटा ! सियाराम सरन जी ओ घरी के

जमाना के बाड़का हाकिम रहलें..। उनका सात बेटी पर से बेटा भइल रहलें..। बाबा के इ जोड़ी राम - सीता अइसन लागल..। दुनु ओर समुन्दर जइसन अथाह रहे..! सियाराम सरन जी के कौनो कमी ना रहे..। एगो बेटा रहे माने उनकर कौनो मांग ना रहे..। संसकारी लड़की , बढ़िया कुल खानदान के हिच्छा रहे...। नोकर - चाकर के कौनो कमी ना रहे..। डेगे - डेगे पर आदमी.. मतरिन्हा, बरतन के मजनिहार.. तेल लगवनिहार..। नाहवाए खतिरा केतना आदमी झूलत रहे..। बाबा के लगे भी कौनो कमी ना रहे..। दुनो ओर छपर फार के भागवान देले रहलें..। 'गउरा' नइहर के सुकुवार रहली.. आ ससुरो ओइसने मिलल..।

बाबा के बुझाईल कि लइका होनहार बा । बाबा एके नजर में आसुतोस के चिन्ह लेलें । लइका त लाखों में एक रहे..! सियाराम सरन जी के भी बाड़ा सवख रहे, कम उमिर में बिआह करे के..। बिआह तय हो गइल । कहीं कौनो लेकिन ना रहे...। जे दोसरा के बिआह में रोपेया - पईसा लुटावेला उ आपना बेटी के बिआह में का करी इ त लोग देखबे करी..!

गउरा सात बरिस के रहली आ आसुतोस बारे के । बिआह तय हो गईल..!' दादी गीत गावस आ रोअबो करस..। बइसाख में बिआह के दिन धराइल..। ओह घरी बरियात मरजाद रहत रहे..। बरिआती लोग के एतना सवागत भइल कि सब लोग जुड़ा गईल..! अभी ले नाम लेत रहेला लोग..कि संकटमोचन बाबा खनिया आदर - सतकार कांहा कहीं देखे के मिलेला..! सियाराम सरन जी, बाबा से कुछु ना मंगले माने बाबा बिना मंगले.. आफरात चीज देहलें..। का ना दिहले.. ?? टरेटर पर दस दिन ले त दहेज ढोआते रह गइल ..। सब कुछ देला पर चूल्हा आ घर लीपे खतरा पीतर के बल्टी आ एक रंगा के थाने दिआ गइल..!

ओह घरी के बिआह बाड़ा सोभत रहे । केतनो बाड़का बेटी के बाप रहिहन ..तबो समधी के आदर में थरथर कांपस ! हामरा से कौनो गलती ना हो जाय..। समधी दुआर पर से खुसी होके जइहें..। एतना चीज देला पर बाबा हरमेसा मुंड़ी नवइले रहस..। लोग अचंभा खाए कि एतना बाड़का आदमी में केतना नेवतइ बा..! दुआरा पर बारिआत आइल त बाबा सवागत में आगे बढ़नी । माई - बहिनी, समधी मिलान के गीत गावे लागल - "ली ना समधी हाथे धोतिया, हाथे पान के बीड़ा, करी ना समधी जी से मिनती, सिर आज नेवाए / जे सिर कबहूँ ना नेवेला, सिर आज नेवाए, बेटी हो गउरा बेटी के कारने सिर आज नेवाए !"

दुआर पूजा होता । दुनो ओर से पंडित लोग बेद हनता..। कनिया निरीछन भइल । भसुर माड़ो में अइलें । ओह घरी दुअरा पर जयमाल ना होत रहे..। बाबा कहले - आंगना में दमाद अइहन त जयमाल होई..। गउरा हाथ में जयमाल ले के सखि लोग के साथे खाड़ा रहली । हाथ पकड़ के जयमाल डलाइल..। आसुतोस फुफा मुड़ी झुका देलें..। केतना सुनदर से जयमाल भइल ! आदर सम्मान के साथे..! कहीं कौनो लंपटइ ना रहे...!. कनयादान के बेरा आसुतोस फुफा के देख के लोग सिहाए लागल ! केतना सुनर बर बाड़ें..! जइसन गउरा ओइसन भोला बाबा !..आ नामो त 'आशुतोष' बा..

धिया - दमाद के जोड़ी बनल रहे ! मड़वा बग - बग बरता ! बर - कनिया दुनु के रूप चुवता ! बाकिर .. बाबा थरथर कांपत रहलें ! गजबे उ सीन रहे ! पाता ना बाबा पर कौनो गरहन लागल रहे का.. ?? बाबा आ दादी के आंख से झरझर लोर बहे - "कवन गरहनवा बाबा साझि बेरा लागेला, कवन गरहनवा भिनुसार .. चन्द्र गरहनवा बेटी साझी बेरा लागेला, सुरुज गरहनवा भिनुसार.. तहर गरहनवा बेटी हामरा लागेला, देत कनयादान उगरिन होईब !"

समधी के माड़ो में खिआवल जाला । समधी पांखा हांकेले । पुछ - पुछ के खिआवल जाला । समधी के केतना आदर दिहल जाला । औरत लोग हंसी - माजाक करेला । सब मरजादा में रहेला । केतना सोहावन लागेला..! "जेवे बइठेले राम लछुमन सखि सब देली गारी, राम जेवेले लछुमन हाथ बटोरेले, काहे मोरे मइया के गारी जी, हम त हई तीनि लोक के ठाकुर माता कोसिला काहे गारी जी, / जाहुं रउवा हई तीनि लोक के ठाकुर काहे अइनी ससुरारी जी ! राम मरजादा में रहलें । उ चुपचाप खात रहलें ..माने लछुमन त सेसनाग के अवतार हउअन । उनका कोसिला के गारी ना निमन लागत रहे । उ हाथ ध के बइठ जास ।

बिआह सादी हो गइल । गउरा फुआ के बिदाई भइल । चिरई- चुरुंग, गाय - भंइस सब रोअत रहे..। दादी के आंख त सावन - भादो भइल रहे..। गउरा के जौन चीज देखस रोए लागस । उनकर आलमारी, उनकर खेलवना देख के करेजा में हुक हो जाए..! बाबा मने - मने रोअस । उनकरो अंखिया लाल हो गइल रहे..। माने महतारी के रोअला से सब लोग रोअत रहे..। माई के मामता के आगे त सब केहु हार जाला..। केतना दिन ले दादी , नीमन से खाना न खइली..। बबी के हई चीज बाड़ा निमन लागत रहे ओकरा हउ चीज पसन रहे । बबी चल गइली.. हामार घर सुन हो गइल..।

कनिया लेके फुफा घरे अइलें..। लछमी अईली ! - "अनधन लछमी लेके अइली दुलहनिया" दउरा में डेग परे लागल । फुफा के माई - बहिन ससुरारी के हाल चाल पुछे लागल । "आमा अलारी पुछे बहिना दुलारी पुछे कह ललन कइसन ससुरारी जी !" फुफा ससुरारी के बखान करत ना अघास । "आमा ले सासु पियारी सरहज गांगाजल पानी जी ।" फुफा के माई हंसे लगली कहली -"नव महीना बाबू एहि कोखी रखनी, कबहूँ ना कइल बड़ाई जी / एक ही रात बाबू गइल ससुरारी ले अइल सास के बड़ाई जी !"

उहाँ के गउरा बबी इंहा के चाची बन गइली । बनारस वाली मइया..! सबलोग उनका के बनारसी मइया कहे लागल..। सात बरिस केत रह ली बनारसी मइया ! आसुतोस चाचा संघे गुल्ली टांड़ खेलस..। कितकित खेलस । लुका - छिपी खेलस..। कौनो काम त करे के ना रहे.. माने तीन गो सास रहली..। सास लोग के बुझाए.. आहि दादा अइसन कनिया ना देखनी जौन दुलहा संघे गुल्ली डांडा खेलतिया.. ! कबो घर के बहरी निकल के खेले लागस...। बाड़का घर के लड़की.. खाए पीए के कौनो कमिए ना...। बाबूजी टीना में रसगुला , पेड़ा , मोराबा भेजत रहस..। दिनभर बनारसी मइया निकाल - निकाल के खास..। आंगना में सास लोग कहे - दुलहिन सब जुठिआ दे तरी...। कइसे जेठा

- बाड़ा के मुंह में परी...? जूठ ना नु परोस के खाइल जाई..? भोरे नहात नइखी..। सास अपने नहवावस ।

दस दिन के बाद बाबा अइले बेटी के दिन ध के बोला ले गइलें । बानारसी मइया कहस - बाबूजी ! हम उ लोग के घरे ना जाइम । उनका के इहवे बोला लीं । हम उनका साथे गुल्ली डांडा खेलेम..। बाबा गउरा के आगे पढ़वलें। फुफा बानारस पढ़े लगलें..। दस में बाड़ा बंढ़िआ नमर से पास हो भइलें। दुनु जाने बाड़का भारी पढ़ाई पढ़ल लोग । फुफा परफेसर हो गइलें आ फुआ डागधर। दुनो लोग खूब पईसा कमाईल...। अपना लइका लइकी के पढ़ावे लागल लोग..। गउरा फुआ हरमेसा कहस - आपना लइकन के बिआह कम उमिर में कबो ना करेम ! फुआ के एगो बेटा आ एगो बेटी बा । दुनु लइका बिदेश में डागधर हो गइल बाड़ें सन ।

फुआ कहेली - लइकाई के बिआह कौनो बिआह होला...? हामरा त बुझाइबे ना कइल कि बिआह का काहाला...! फुआ नइहरे रहके पढ़ली । कबो - कबो जग - परोजन में आपना घरे जास...। फुफा रिटायर हो गइल बाड़ें...।जास त में ठेकुआ ले जास.. कहस खा स, एमे खाए वाला सोटा लगाव बा..। पेट ना खाराब होई..। केतना मोलायम बा । बनारसी मइया हमनी के गरम दूध में ठेकुआ डाल के देस..। कहस - खा स बचवा तागद होई..। बिना घीव के खाना ना खास । आ मलाई वाला दही उनका चाहबे करीं..। एक गिलास दूध राती का मलाई वाला हरदी डाल के पीअस..। बनारसी मइया के बुझात रहे देह में से खून चुअता..। रूप चुअत रहे बनारसी मइया के..। चामड़ा एतना पातीर कि बुझाए कि एगो सीक से खोद दिआई त खून निकल जाई..!

दुनु बेकत मिल के गांव में हाई इसकूल- कौलेज सब खोल देले बा लोग । उ लोग के पढ़ाई पर बड़ा धेयान रहे..। बाल बिआह के त दुनो आदमी बाड़का बिरोधी रहे । सिछा पर उ लोग के बाड़ा जोर रहे..। अब बानारसी मइया गांव आइल बाड़ी । मेडिकल कालेज खोलले बाड़ी..। लड़की सब के कहीं नइखे जाए के परत । आपन सब कमाई सिछा में लगा देलस लोग । उनकर कहनाम रहे कि गांव के कौनो लइका लइकी असिछित ना रहे...। सब आपना बल पर खाड़ा होखे तब बिआह करे के होई । बिआह भागल जाता..? उनका अपनो लइका के बिआह के फिकिर नइखे..। पढ़ाई जरुरी बा...।पढ़ लिख के होशियार बनला के बाद बिआह होई..। आ बिआह बैदिक रीति से होई..। एक - एक मंतर के अरथ बुझ के बिआह होई ! बिना समझ - बुझ के बिआह , कनिया पुतरी के बिआह ह..। जइसन हमनी के भइल ओइसन बिआह ना होखे के चाहीं । आपना मन के सारधा दुनु आदमी ऊंच सिछा देके पूरा कइल..!! पहिले पढ़ाई तब बिआह इहे दुनु आदमी के मंतर रहे..

डॉ. शिप्रा मिश्रा
कोलकाता

डॉ. शिप्रा मिश्रा

बखरा

"देखबे ईया! हमरा के केतना छोट देले बाड़े.. हमरा के बड़का दे.. ऊँ ऊऊऊऽऽऽ"
"रे करियठा! अब गांछ बिरिछ के फर - फरहरी कहीं जोख के मिलेला.. खा ले ईहे लीची.. काल्ह दू गो देम तोरा के.. मलकीनी पांचे गो त देली ह। एगो सरले निकल गईल ह."
"हूँ.. हम ना खाएम जो.. काल्हे दू गो दीहे...
हे नकचिपटा के एगो.. तबे हिसाब फरियाई.."

ईया के मन रहे एगो अपनो लीचीया खाए के मने एकनी के मारे का ठेकी.. बाप त ओराईए गईले.. अब ईयो ना देखस त के देखी... ईया के अब उमिर बा चऊका बरतन करे के! तबो लागल बाड़ी। आपन बंसवारी दोसर के अगोरी.. अब ईहे करम में बा त केकरा से गोहराई।

घोनसारी से भूजा आईल ना कि सब लईका उलिट गईले सन... तनी हमरो के तनी हमरो के। लोटिनिया मने - मने चहलस कि भऊर में सोंनाईल अलुआ लुका के ध दीं। लेकिन मुंहटेढ़ी देख लेहलस।

अब त एकरो के देवे के होई। भंटा रहित त ऊहो पाकित। लईकन के लूटला से जौन बाच गईल ओमें दुनू गोड़िन के बखरा लागल। नीचे त खाली किन - किन रहे। ओही में उचिला के जवन मिलल, ओही में सबूर करे के होई।

ईया के भूजओ ना भेंटाईल.. हई चारि गो जनमा के ऊधियवना बिला गईल.. अब एकनी के पोसल ठठ्ठा बा। ईया के हड़री झुरा गईल एकनी के परवस्ती करे में।

"रे हमार जमा काहे पेन्हले बाड़े.. उतार ना त चहल देम.. ते बड़का खटिया पर सूतबे.. आ हम गोनतारी.. उतर.. जरिये से बड़का झीटे के लखुत हो गईल बा.. कपारे फार देम.."
"ते त बड़का बेईमान हऊए.. सब में निमने चाहीं। दही के हड़िया ले के बईठ जाले। आव फरिया लेवे के अजुए।"
ईया टूटही खटिया पर पिछवाड़े परल बाड़ी। किरिया करम कईल बलाए भईल बा। कऊनो अलम नईखे। एकनी के भूजा, सतुआ खा के पोसनी.. कूटनी, पिसनी क के जियईनी.. हमार ना भईले सन। अब त कमातो बाड़े सन.. कबो - कबो झांकी पार जाले सन..

"ईया! मछरी खईबे.. गोस खईबे.. आन दीं।"
" तोनी के चिड़उनी भईल बानी रे ऊधियवना सन.. हम मछरी, गोस खानीं। मछरी, गोस खईतीं त

तोनी के के तरे जियत सन रे.. भाग ईंहां से.. भाग.. "

"का रे ! ए गछिया में हमार बखरा नईखे । हमरा छौड़ी के हथवा से काहे छीन लेले ह । तोरा के अवकात देखावल जरूरी बा । आवे दे काले हमरा सरवा के । बिधाएक जी के डराइबर ह । उजार के फेंकवा देम तोनी के ।"
"जो रे सारे जो ! लुका जो भऊजी के अंचरा में.. मऊगाड़ी.. हमरा के कम बूझतारे का.. हमार त ससूरे ढेर बाड़े तोरा खातिर.. दिन रात कलक्टरे के लगे रहें लें.. बोलाव अपना सार के छठियार होईए जाव एमकी ।"

ईया सुरग से आजो ताकते बाड़ी.. देहिंया के बखरा ना लागल ईहे ढेर बा.. लागित त का होईत.. हमार गोड़वा हथवा के बखरा ना लगवले सन ईहे ढेर बा । बाकिर ई सुरगवो में बखरा लाग जाईत.. मूड़ी सुरग में आईत आ गोड़वा नरकवा में.. हथवा सुरग में त पेटवा नरकवे में..
ई बखरा कहियो ना ओराई..

विंध्याचल सिंह

बुढ़ऊ- बलिया

विंध्याचल सिंह

बाबू जी के सीख

गनेस जब आपन खेत देखि के अइलें त उनुकर खून खउलि गइल। एक दू हाथ ना पूरा टेक्टर के एक हराई खेतवे भुनेसर सिंह जोतवा लेले रहलें। गनेस भुनेसर सिंह के सवांगी के ताकत आ आपन कमजोरी जानत रहलें बाकिर ऊ एतना नाइंसाफी पचा ना पवलें आ भुनेसर सिंह के दुआरे चहुँपि गईलें। ऊ भुनेसर सिंह से पूछलें -

"का हो! नीमन कइल ह न ? हमार एक हराई खेत धइके जोतवा लेले बाड़ ?"
जवाब त तनि अउरी खून खउलावे वाला मिलल।
भुनेसर सिंह कहलें -

"हम तोहार काहे के खेत जोतवाईं ? हम आपन खेत जोतववले बानी। आ तोहरा लागत होखे कि ऊ तोहार ह त जा जवन मन करे तवन कइ लीह।"

गनेस अपमान के घूंट पीहिके अपना घरे लवटि अइलें। उनुकर मलकिन कुछु एह बाति के सुगबुगाहट पवले रहली। पतिदेव के तमतमाइल चेहरा के देखि के उनुसे पूछली त ऊ कुल्ही बाति बतवलें।

ई बाति गनेस सिंह के बेटवा मंटू भी सुनि लिहलस जवन कि एक दिन पहिलहीं अभी इलाहाबाद से आइल रहे आ घर में बइठि के पढ़ाई करत रहे।

अब त मन्टू लाठि लेइके बेरि - बेरि घर से दउरल चाहे आ गनेस आ उनुकर मलकिन के ओकरा के धरे में दम फूलि गइल।

अन्त में गनेस कहलें -

"मंटू तूंजा। हम तहके ना रोकम। तनि हमार बाति भर सुनि ल।"

मंटू सुने लगलें आ गनेस कहे लगलें -

"अबही काल्हुवे एगो हमार बिसवासी आदिमी कहत रहुवे कि भुनेसर सिंह के परिवार मंटुवा के इलाहाबाद में नौकरी के तैयारी कइला से जरता आ ओकरा के कवनो केस में थाना में

फंसवला के पलान बना रहल बा। हम नइखीं चाहत कि जवन कुल्ह हम झेलनी ऊहे तुहूं जिनिगी भर झेल। हमार कहल मान त एही राते चुपचाप इलाहाबाद निकसि जा। बड़ ना त कवनो छोटहुवों नोकरी में आ जा।तब सब कुछ देखि लिहल जाई। तूं हमार चिंता बेलकुले जनि कर। आदिमी के समय बलवान होला। तूं आपन समय के मोल समझे में भूल जनि कर।"

गनेस के बाति में छिपल सीख आ सनेस के समुझि के मंटू ओहि राते चुपचाप इलाहाबाद जाइके अपना पढ़ाई में लागि गइलन।

भुनेसर सिंह के आपन बेटा चारि गो रहलें। ए पर ऊ घमण्ड करसु। बाकिर ऊ खेतहा एहिसे कहासु कि सुनेसर सिंह के खेतवा भी लेले रहलें। आ सुनेसर सिंह के त बियाहे ना भइल रहे।

सुनेसर सिंह के खेत में गनेस सिंह के भी हिस्सा होखे के चाहीं काहें कि सुनेसर सिंह अपना माई बाप के अकेले रहलें। जेतना ऊ भुनेसर सिंह के नजदीकी रहलें ओतने गनेसो सिंह के रहलें बाकिर भुनेसर सिंह बेईमानी से आ बहला - फुसिला के उनुके अपना में मिलवले रहसु।

मंटुवा के जब अपना गाँव आ माई- बाबू के देयादन वाली सांसति के बाति इयाद आवे त ऊ राति- राति भर जागले रहि जाउ। एकदिन ऊ बड़ नोकरी के तैयारी छोड़ि के पुलिस में भर्ती होइ गइल।

इहाँ गाँव में भुनेसर सिंह के चारु लइका कवनो ढंग के ना निकललें सन। उन्हनी के टएम घूमे - फिरे आ झगड़ा - फसाद में ही बीति जावे।अइसन पढ़ाइयो - लिखाई ना रहे कि कवनो ढंग के नोकरी मिलि सको। घर में भी हरमेस खटर - पटर चले लागल रहे। ई जानिके कि बुढ़ौती में सुनेसर सिंह अब कहाँ जइहें सेवा - सत्कार कम हो गइल रहे आ उनहूं के कुसारी होखे लागल रहे। कबो - कबो त भुनेसर सिंह के मनबढ़ बेटवा सुनेसर सिंह के डांटियो द सन। अब सुनेसर सिंह का करि सकत रहलन। ना केहू से बतिया सकसु ना आपन दुख - सुख केहू से कहि सकसु।हरमेस डेरात रहसु।

अब गनेस सिंह कतनो उकसवलो प झगड़ा - बवाल से दूरे रहसु। ऊ सोचसु कि जब मंटू नोकरी धइये लेले बा त का चाहीं। खेत केहू केतना जोती? एक मंडा दुई मंडा! अउरी का क पाई?

कबो - कबो कवनो बाति के चोट एतना गहराई से लागि जाला, कि ओहके भुलावे में समय भी कम पड़े लागेला। गनेस के भले भुला गइल होखे बाकिर मंटू के मन से भुनेसर सिंह के ई बाति भुला ना पावे, जब ऊ बाबूजी के कहले रहलन -

"जा जवन करि सकेल तवन करि ल"

ई बाति ओकरा मन के कचोटि जात रहे। मंटू बेरि - बेरि सोचे कि कबो ओ बाति के जवाब जरूर देहल

जाई।

मंटू गाँव आइल रहे। संगी - साथी लइकन के खिया - पिया देउ। ओकरा से दुश्मनी राखे वाला त कवनो लइको ना रहलें सन। गाँव में वाह! वाह! होखे। ए ही बीचे एकदिन बगइचा में सुनेसर सिंह भेंटा गइलन। मंटू गोड़ छुई के सलाम कइलस। गोड़ प कुछु रुपिया ध के फेरू भुनेसर सिंह के बगली में धइ दिहलस। मंटू पूछलस -

"बेमार रहत बाड़ का काका जी?"

मंटुवा के अपनापन के भाव से परनाम कइला से खुश होके सुनेसर सिंह ढबढिया गइलन।

"मंटू! हमार हालति बहुते खराब बा। खेत - बारी सब कुछ लेइके ई जानिके भुनेसर के लइकन के संगे सटल रहनी कि बुढ़ापा में कवनो दिक्कत ना रही। बाकिर ऊ काहे के! केतनो दुख - तकलीफ में एगो टिकियो नइखे लो लेआवत। आगे का होई अब त ऊपरे वाला जनिहें। हम मने - मने बहुते पछतालीं कि तहरा संगे भुनेसर ठीक ना कइलें आ ओह समय हमरो मती हेरा गइल रहे। बाकिर सबेरही कचहरी चल, हम खेत तहरा नावें करतानी अबही आपन हाथ नइखीं कटले। ई बाति हम बहुते सोचि समुझि के कहत बानी। भले तूं भेंटा गइल। अब तूंही हमार नइया पार लगइह।"

मंटू त अइसने मोका के तलाश में रहबे कइल। लोहा गरम रहे तबे ओह पर चोट काम करे। ऊ झट से कहलस -

"काका! जइसन कह। हम त तहके अपने बाबूजी जइसे मानेलीं।"

अगिला दिने सुनेसर सिंह आपन सगरी चारि बिगहा खेत मंटू के नामे करि दिहलें आ ई एतना चुपे - चुपे भइल कि केहू जनबो ना कइल।

दुइ - तीन महीना बाद जब ई बाति गाँव में पता चलल त कानाफूसी होखे लागल। भुनेसर सिंह के बेटवा सभ सुनेसर सिंह के डांटे - झपिलावे लगले सन। भुनेसर सिंह भी एह बेरी तैयारे बइठल रहलें। ऊ भुनेसर सिंह के घर से उठि के गनेस सिंह के घरे चलि अइलें।

हल्ला - गुल्ला सुनिके लोग बटुराइल। मंटू भी ओह समय छुट्टी आइल रहे। ऊ कहलस कि काका हमरी इहाँ रहिहन त हम जरूर राखबि। ई हमार काका हउवें। इनिका से पूछि लिहल जाउ।

लोगन के पूछला पर सुनेसर सिंह कहलें कि भुनेसर के इहाँ हमके परेशानी होता। अब हम गनेस के इहाँ रहबि। अब केहू का करि सकत रहे। लोग कहल कि ई त रहे वाला क मरजी के बाति होला। केहू बरिआई से ना नू राखि सकेला।

भुनेसर सिंह आ उनुकर बेटवा हाथ मलि के रहि गइलें। अपना गलती से ऊ हारि गइल रहलें आ बेइज्जती ऊपर से होत रहे। आजु मंटू के मन खुशी से नाचि रहल रहे। आजु ओकरा अपना बाबूजी के सीख पर गरब होत रहे

महेन्द्र तिवारी

महेन्द्र तिवारी
राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ, नई दिल्ली - 110001
चलभाष : 9989703240
ईमेल : mahendratone@gmail.com

महेन्द्र तिवारी

नचदेखवा

ओह दिन दुपहरिया में ई खबर फैलल कि बगल के गाँव में एगो मशहूर नौटंकी आवत बा। ई खबर सुनते हमनी के तड़पत दिल उछल गइल। हमनी के मंडली में पांच - छह गो फुर्ती वाला लईका रहले। अगर ओह में से केहू के कवनो खास नाच के बारे में कुछ भी मालूम होखे त ओकरा के सभका से साझा कर लेत रहनी सन।

बिजली रानी, तारा रानी, चाँद - सीतारा, चंपा बाई - ई खाली नाम ना रहे, बलुक ओह दौर के नवहियन के दिल के धड़कन रही जा। नाच के दृश्य पर खाली नचनिया लोग के ही बोलबाला ना रहे, लौंडा भी आपन पकड़ बनवले रखले रहे लोग। ऊ ई दुबला - पतला, सुन्दर नवही रहले जे जब मेहरारू के कपड़ा पहिन के मंच पर आवत रहले त असली मेहरारूवन के भी जलन होखे लागत रहे। इनकर नाच में एगो अनोखा पहचान रहत रहे। जब ऊ लोग कूदत आ एगो लय पर कमर हिलावत रहले त भीड़ में मौजूद लोग ताली पीटे लागत रहे।

मुलन भैया उत्तर भर खेत से घरे लवटते ही सबका खबर कर दिहले। "आज पसउर चले के बा। आज बिजली रानी आवत बाड़ी।"

परिवार के लोग के नजर से बच के हमनी के आपन रणनीति बनवनी जा। जइसहीं गाँव के आखिरी घर में लालटेन के लौ बुझाइल आ बुझाइल दीपक के धुँआ कोठरी से बाहर निकलल, हमनी सन आपन बिस्तर अऊर लोई के पीछे छोड़ के चोर नियन दुआर से बाहर निकल गइनी सन। हम सब गाँव के चौक पर बड़हन बर के पेड़ के नीचे जुट गईनी जा। हवा में पतई के हलचल भी एगो साजिश के हिस्सा लागत रहे।

रामाशंकर के हाथ में एगो लमहर टार्च रहे जवना में डोरी लागल रहे। ऊ उहे मशाल रहे जवन उनकर बाबूजी पिछला हफ्ता खेत से सियार के भगावे खातिर दिहले रहले। गुड्डू एगो लमहर लाठी पकड़ले रहले, आ हम सब पीछे - पीछे चलत रहीं जा।

हमनी के निशान लेके पसउर के ओर बढ़नी जा। सड़क के दुनो ओर रहर के खेत रहे। कबो कहीं दूर से सियार के हुआँ - हुआँ सुनाई देत रहे त कबो अनदेखल चिरईं के फड़फड़ाहट से हमनी के दिल के धड़कन बढ़ जात रहे। बाकिर नाच में अतना नशा रहे कि डर भी लाचार हो गइल रहे।

अब हमनी के पसउर के सीमा में पहुँच गइल रहीं जा। दूर से पेट्रोमैक्स आ गेस के दूधिया रोशनी में नहाइल समैना लउकत रहे। लाउडस्पीकर से शुरू होखे वाला नाच के आवाज हमनी के कान तक पहुँचत रहे। हमनी के पैर के चाल बढ़ गईल रहे। उल्लास मन से उफान मारत रहे। बस कुछ मिनट के ही देरी रहे हमनी के उहाँ पर पहुंचे में, बाकि हमनी के ओह मनोरंजक पल के मजा आवे

लागल रहे।

जइसे - जइसे हमनी के गाँव के बहरी इलाका में पहुँचनी, संगीत अचानक फीका पड़ गइल आ ओकर जगह हल्ला गुजार ले लिहलस। "चोर - चोर, डकैत। पकड़s। मारs !" रात के अन्हारी के छेदत ई आवाज हमनी तक पहुँचत रहे।

हमनी के कुछ समझ आवे से पहिले गांव के गली से चिल्लात लोग हमनी के तरफ आवे लगले। चोर - डाकू आगे - आगे, ओकरा बाद लाठी - भाला से लैस गांव के लोग के भीड़ रहे। आ ओकर बीच में हमनी के फँसत रहीं जा। समस्या बड़ा गंभीर हो गईल रहे। जे - जे नाच देखे वाला रहले उहो भागे लगले।

हालात भयावह हो गइल रहे।। अगर हमनी के उहाँ पर खड़ा रहतीं जा त दू गो खतरा के सामना करे के पडित या त डाकू लोग हमनी के गोली मार दित भा खिसियाइल गाँव के लोग हमनी के पकड़ ले जइतन जा, काहे कि अन्हार में हमनी के उ लोग डाकू के साथी समझ लिहित।

"भागs !" सुशील आवाज दिहले। दिशा के सब ज्ञान हेरा गइल। हमनी के जान बचावे खातिर तुरत दौड़ गईनी जा। आगे रहर के खेत लउकत रहे। रहर इंसान से भी लमहर हो गईल रहे। बिना एक पल बरबाद कइले हमनी सन खेत में घुस गइनी जा।

हमनी के हाथ पकड़ के ऐके संगे झुंड बना के अंदर घुस गईनी जा। हम सब खेत के बीच में जाके बइठ गइनी जा। हमनी के साँस लोहार के भाथी नियन चलत रहे। हमनी सन साँस रोक के उहाँ लुका गइनी जा। ऊ रहर के खेत हमनी खातिर ओह रात एगो किला जइसन मदद कइलस। उ खेत हमनी के गाँव के लोग के नजर से अऊर डाकू के गोली दुनो से बचा देले रहे। बाहर से गाँव के लोग के चिल्लाइल आ दउरत पैर के आवाज़ सुनाई देत रहे। इहे कोई बीस मिनट ले हमनी के ओहिजा रहनी जा। जब हल्ला तनी कम हो गइल त हमनी के दोसरा दिशा में हिम्मत जुटा के निकल गइनी जा।

हमनी सन खेत से निकल के एगो कच्चा रास्ता धइनी जा। आगे बगइचा रहे। ई बगइचा दिन में भी भयानक लागत रहे आ रात में त एकर डर अउरी लागत रहे। घनघोर पेड़न के चलते अन्हार एतना कइले रहे कि मशाल के रोशनी भी कुछ फीट तक ही घुस सकत रहे।

हमनी सन ओह बगइचा में घुसे लगनी जा। बगइचा के बीच में पहुँचते ही अचानक एगो आवाज हमनी के रोक दिहलस। कुछ खनखनईला जइसन आवाज़ सुनात रहे। बर्तन के खनखनईला के आवाज आवत रहे। हवा पूरा तरह से बंद रहे, एहसे आवाज साफ - साफ सुनाई देत रहे। हमनी के चौंक गईनी सन। एह गसीन बगइचा में एह रात में बर्तन के आवाज काहे आवत बा।

हमार एगो साथी हमनी के रुके के संकेत दिहलस। हमनी के एगो पेड़ के पीछे से धुका लगाके ध्यान से सुने लगनी सन। बर्तन के खनखनईला के साथे - साथे फुसफुसाहट भी सुनाई देत रहे।

"ई घड़ा हमार ह। आ ई थाली तू रख लs" एगो चोर धीरे से कहलस।

हमनी के काठ मार दिहलस। हमनी के ई बुझे में देर ना लागल कि ई उहे डाकू हवें जे गाँव लूट के इहाँ पहुँचल बाड़ें। चोरी के बर्तन - पीतल अऊर फुलहा, गहना, कपड़ा एहिजा एह सुनसान बगइचा में बाँटत बाड़न जा। हमनी के इ बात के भनक होखते ही पसीना से भींज गईनी जा। अगर उ लोग हमनी के देख लिहित त दोसरा दिन हमनी के लाश ही दिखित।

हमनी के तुरंत फैसला लेवे के परल। आगे बढ़ल जोखिम भरल बा, काहे कि सूखल पतई के सरसराहट ओह लोग के सचेत कर सकत रहे। हमनी के सावधानी से आपन रास्ता बदल देनी सन। हमनी के अब ओह डाकू लोग के चंगुल से बचे खातिर बगइचा से बाहर निकले के पड़ल। दस मिनट के सफर घंटन जइसन लागल। जब हमनी के बगइचा के दूसरा ओर चौड़ा रास्ता पर पहुँचनी सन तबे हमनी के जीव में जीव आइल। अब हमनी के सामने दू गो विकल्प रहे कि घरे लवटल जाव भा नाच देखे के अभियों मन बा। नचदेखवा के दिल एतना आसानी से हार माने वाला ना रहे।

"हमनी के एतना परेशानी सह लेनी जा, त अब नाच देखला के बाद ही घरे जाइब सन" सब लोग सर्वसम्मति से फैसला कईले।

वइसे भी घरे वापसी के रास्ता ओही बगइचा से गुजरत रहे जहाँ डाकू लुकाइल रहले। आगे बढ़ल बुद्धिमानी के बात रहे। रात के इहे कोई दस बजत होइ। एगो लंबा चक्कर लगला के बाद आखिर में हमनी के पसउर के समैना में घुस गईनी जा। जइसहीं हमनी के भीरी पहुंचनी जा, सब थकान खतम हो गईल। माहौल अब पूरा बदल गईल रहे। इहाँ केहु के डकैती के जानकारी तक ना रहे, उ लोग आपन अलगे दुनिया में झूमत रहले।

समैना के भीतर के नजारा एकदम जादुई रहे। बीडी आ सिगरेट के धुँआ हवा में लहरात रहे, जवन पेट्रोमैक्स के रोशनी में धूप के धुँआ से मिलत जुलत लागत रहे। मंच पर एगो 'लौंडा', हरियर रंग के साड़ी पहिन के अवुरी बाल में गजरा लगा के "आरा हिले छपरा हिले, बलिया हिलेला" गाना प नाचत रहे। उनकर हरकत, उनकर झूलत कमर, आ आँख के इशारा सब मन मोहत रहे। हमनी के एगो कोना में जगह मिल गईल रहे। हमनी सन के पसंदीदा गाना पर एगो नचनिया नाचत रही, "मुखिया जी मन होखे त बोलीं, नातऽ खाईं बरदाश्त वाला गोली।" एह गाना पर खुश होके एगो दबंग दिखे वाला बाबु साहेब आपन गन से एगो फायर भी कइले।

अब बिजली रानी के बारी रहे। लोग बेसब्री से उनुका आवे के इंतजार करत रहले। लाल रंग के बॉर्डर वाला पीयर रंग के साड़ी पहिन के उ मंच प पहुंचल रहली। भीड़ बउरा गइल रहे। बिजली रानी के डांस मन मोहे वाला रहे। बिजली रानी जब लचका गवली त लोग सीटी बजावे लगले।

लेकिन ई रात हमनी के ग़ज़बे पीछे पड़ल रहे। अभी हमनी के नाच के मजा लेवे के शुरु कइले रहीं सन कि मंच के लगे बईठल लईकन के एगो गिरोह पर नज़र गइल। ऊ लोग जोर से सीटी मारत रहे। जब रोशनी ओह लोग के चेहरा पर पड़ल त हम सब चौंक गइनी सन।

इ उहे नवही लोग रहले, जेकरा के हमनी सन दस दिन पहिले चरपोखरी बाजार में अच्छे से कुटाई कर देले रहीं जा। आज उ लोग के इ आपन इलाका रहे, आपन गांव रहे। ओह में से एगो हमनी के चिन्ह लिहलस। उ अपना बगल में बईठल अपना साथी के कोहनी मार के हमनी ओर इशारा कइलस। धीरे - धीरे ओह गिरोह के ध्यान अब नाच से हटके हमनी ओर हो गइल। बदला के भावना

ओह लोग के आँख में साफ लउकत रहे। आपस में फुसफुसाए लगले, त कुछ लोग आपन जगह से भी उठ गईले।

संगीत त अबहियों गूँजत रहे, बाकिर अलार्म के घंटी हमनी के कान में पहिलहीं से बाज चुकल रहे । "बाहर निकलऽ जा, ना त आज हमनी के उपर मुसीबत आ जाई" हमार साथी सब फुसफुसा के कहलस।

उहाँ पर ठहरल अब शेर के मियान में झांकला जइसन लागत रहे। उ लोग के संख्या हमनी से जादे रहे अवुरी इ उनुकर इलाका रहे। अगर कवनो रार ठन जाइत, तऽ नाच तऽ छूटते रहे, सही सलामत घर लवटल भी मुश्किल हो जाइत। हमनी के दिल टूट गइल। हमनी सन एतना जोखिम उठवले रहनी, डाकू से बच गईल रहनी, काँट प चल के नाच देखे अइनी सन अवुरी अब मंजिल प पहुंचला के बाद भी मुसीबत पीछा ना छोड़त रहे।

धीरे - धीरे, हमनी सन समैना से निकल गइनी सन। नचनिया के पायल अबहियों झनकत रहे, बाकिर ऊ हमनी के इशारा ना करत रहे, बलुक उ हमनी के चेतावत रहे। हमनी सन जल्दी ही बाहर आ गईनी।

"अब हमनी के का करे के चाहीं ?" सुशील काँपत पूछले।

हम दूर से झिलमिलात मरकरी के रोशनी के ओर इशारा कइनी। “सुनले बानी कि आज चरपोखरी में तारा रानी आइल बाड़ी।”

नचदेखवा के मन एक बार फेर से जोर मारे लागल। सबका आँख एक बार फेर से जगमगा गइल। पुरान थकान, डाकू के डर, आ दुश्मनन के खीस सब कुछ हमनी के पल भर में भुला गइनी सन । रात के इहे कोई 11 बजत होइ। वापसी के रास्ता में चंदा मामा धीरे - धीरे बादल से निकल के आसमान में घुमत रहन । अबकी बार रहर के खेत अइसे झूलत रहे जइसे हमनी के पहचान के मुस्करात होखे। हमनी सन अब दूसरा समैना के ओर बढ़े लगनी जा।

ऋषिदेव
महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा, बिहार
कक्षा - 7 में अध्ययनरत।
चलभाष : 9693228474

ऋषिदेव

काकोरी काण्ड

9 अगस्त, 1925 के भारतीय क्रांतिकारी लोग शाहजहांपुर से लखनऊ जाए वाला नंबर 8 डाउन ट्रेन पऽ काकोरी गांव के नियरा हमला कइलें। ई घटना भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान घटल रहे। ब्रिटिश राज के विरुद्ध बहुत भयंकर युद्ध छेड़े के इच्छा से हथियार किने खातिर ब्रिटिश सरकार के खजाना लूट लेबे के ईं एगो ऐतिहासिक घटना रहे। जे 9 अगस्त 1925 के घटल। एह ट्रेन डकैती में जर्मनी के बनल चार गो माउजर पिस्तौल काम में ले आइल गइल रहे।

अंग्रेज 19 दिसंबर 1927 के तीन स्वतंत्रता सेनानी लोग के एक साथे फांसी देलें सऽ आ एह सजाईं के सबसे बड़ खलनायक बनलें वकील जगत नारायण मुल्ला। आ जज सैय्यद ऐनुद्दीन, जे मुल्ला के दलीलन के स्वीकार कइलें। 9 अगस्त 1925 के काकोरी स्टेशन के नियरे रेलगाड़ी से अंग्रेजन के खजाना लूटे के घटना के बाद राम प्रसाद बिस्मिल के गोरखपुर में, अशफाक उल्ला खान के फैजाबाद में आ ठाकुर रोशन सिंह के इलाहाबाद में अलगे - अलगे फांसी भइल। बाकिर चौथा क्रांतिकारी राजेंद्र नाथ लाहिड़ी के 17 दिसंबर के यानी दू दिन पहिले गोंडा में फांसी दे दिहल गइल। काहे कि अंग्रेजन के ई डर रहे कि चन्द्रशेखर आजाद ऊहां के छोड़ा मत लेसु। काकोरी घटनास्थल प मिलल चादर में लागल धब्बा के निशान से पुलिस ई पता लगवलें सऽ कि ई चादर शाहजहांपुर के रहे वाला बनारसीलाल के ह। ऊहां के बिस्मिल के सहयोगी रहनीं। बनारसीलाल से सब बात अंग्रेजी पुलिस उगलवा लेलें स। 26 सितंबर 1925 के रात के समय पूरा देश में एक साथे गिरफ्तारीं भइल। 16 गो भारतीय क्रांतिकारी लोग के गिरफ्तार क लिहल गइल। बाकिर चन्द्रशेखर आजाद अंग्रेजन के आंखिन में धूल झोंकि के फरार हो गइनीं। काकोरी काण्ड के मुकदमा 10 महीना तक लखनऊ में हजरतगंज जीपीओ के रींग थिएटर हाल में चलल। जगत नारायण मुल्ला क्रांतिकारी लोग के खिलाफ अंग्रेजन के ओर से केस लड़लें। मुल्ला, राम प्रसाद बिस्मिल से 1916 से वैमनस्य रखत रहे। काहे कि तब बिस्मिल लखनऊ में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के एगो बड़ जुलूस के अगुवाई कइले रहन। जेकर मुल्ला विरोध कइले रहे। काकोरी काण्ड में शामिल क्रांतिकारी लोग के खिलाफ केस लड़े खातिर ओह जमाना में मुल्ला के अंग्रेज 500 रुपया हर दिन देत रहन स। इहे ना, आज से अंदाजन 90 साल पहिले ब्रिटिश सरकार 3 लाख रुपया खर्च कइलें स। जगत नारायण मुल्ला ब्रिटिश के अतना खास रहन कि जालियांवाला बाग के जांच खातिर बनल हंटर आयोग के सदस्य रहलें। ई जनरल डायर के सहायता से निहत्था लोगन के गोली चलावे के आदेश के भी सही ठहरवले रहलन। काकोरी काण्ड ममिला में जज सैय्यद ऐनुद्दीन, मुल्ला के दलीलन के स्वीकार कइले रहन। एकर जज हैमिल्टन 6 अप्रैल 1927 के फैसला सुनवलें। काकोरी काण्ड में लूटल गइल कुल रकम 5000 से कम रहे बाकिर क्रांतिकारी लोग के पकड़े आ ऊहां सब लोगन के मृत्युदंड के सजाई दिआवे खातिर अंग्रेज आठ लाख रुपया उड़ा देलें सऽ।

श्वेता पाण्डेय मिश्र 'खुशबू'

C/O वीरेंद्र नाथ पाण्डेय
समीप- बिसरायन बाबा
पोहारीपुर, मुलायमनगर, शिवपुरी कालोनी
गड़वार रोड, बलिया, उत्तर प्रदेश
Pin code – 277001
सचल दूरभाष - 6393621138

श्वेता पाण्डेय मिश्र 'खुश्बू'

सुननि ह कि कनिया आइल

कहेला केहू कि कनिया आइल,
त केतना सुंदर छवि बनेला ।
गौरा आ सीता के नियन
मनमोहक एगो रूप सजेला ।।

पांव महावर हाथे मेहंदी
माथा प गोलकी ललकी बिंदी,
बदरी के रेखा आंख में धई के
केसु नियन ओठ रंगाइल ।।

लाल किनारी चाकर पाढा,
चमकत चुनरी में तनी हेराइल ।
तनी सकुचाइल, तनी शरमाईल,
घूंघटा के ओट में तनी लुकाईल ।।

पांव धरे जब धीरे - धीरे,
सखियन बीच रहे सकुचाय ।।
पिया मिलन के मुदित रहे मन,
तबो कटईला रात बुझाय ।।

जब डाल गला में बांहि ऊ मिले,
पत्थरों दिल लागे तब हीले ।
बाबू, माई, गांव, नगरिया
बिरनो रोवे छान्ही भीतरिया ।।

लेकिन अब त कुल बदल गईल बा,
पच्छिम की ओरी मुंह भईल बा,
ना नाचे त कनिया कइसन ?
एहकर पुरजोर शोर भईल बा ।।

माई सजेली पार्लर जाके
बाबू के केहू फेटा बान्हे,
हीत - नात कुल बा अखुताइल
मड़वा के बा बांस हेराइल ।।

कनिया कम नचनिया लागे,
तमाशा क कवनों नटिनिया लागे ।
लाज लिहाजा कुल गइल बिलाई,
सुननी हं की कनिया आईल,
सुननी हं की कनिया आईल...

मोहन जी श्रीवास्तव

तिखमपुर, बलिया
प्रबंध संचालक-
सत्यांश उपक्रम प्राइवेट लिमिटेड
अध्यक्ष - टू आईज फाउन्डेशन
प्रबंधक-
श्री दयालु बाबा सत्य नयन इंटरमीडिएट कॉलेज

मोहन जी श्रीवास्तव

चिरईया

चहकत चिरइयां के पर कतराइल
तबो ना कसइया के हियरा जुडाइल

चहकत चिरइयां के पर कतराइल
तबो ना कसइया के हियरा जुडाइल

उहो रहे क्वनो एगो माई के बेटी
भरि - भरि उड़नवा आकाशवा समेटी

ऊपरे से धई के उ नीचे खिंचाईल
तबो ना कसइया के हियरा जुडाइल

चहकत चिरइयां के पर कतराइल
तबो ना कसइया के हियरा जुडाइल

नोचि - नोचि पाँखि ओकर देहिया उघरलस
एक- एक छन में सई - सई बार मरलस

तनिको बेदरदा के दरद ना बुझाइल
चहकत चिरइयां बलाते मराइल

तबो ना कसइया के हियरा जुडाइल

कनक किशोर

रांची, झारखण्ड
सचल दूरभाष - 9102246536

कनक किशोर

भोजपुरी लोक अ बाजारवाद

तनिका रहिहऽ दूर तू, नाशे लोक बजार।
भोजपुरी हऽ लोक के, सीखऽ लोकाचार।।

पछेया हवा बयार के, होता सगरो पूछ।
जनिया नाचे दुआर प, मरद आज बिनु मूंछ।।

परंपरा के नांव पर, गावे गारी गीत।
ससुर ठुमके बहू संग, बबुआ कइसन रीत।।

खेत बेचि बइठल शहर, बाप मतारी गांव।
बाबू घूमे मा ॅल में, तनिक न भावे गांव।।

पढ़ल लिखल ऊ छोड़ के, गइले घर से दूर।
चाहत दिल में एक रहे, शहर करी मशहूर।।

माटी कहे पुकार के, जा जनि बबुआ दूर।
शहर बना रखी तोहे, घर अपना मजदूर।।

खड़ा गेट पर सेठ के, पगड़ी माथे तोर।
संतरी बनल देखि के, बाबा आंखिन लोर।।

बरगद, महुआ, आम सब गायब खेत बधार।
जिनिगी धुआं - धुआं भइल, टूटल घर परिवार।।

रील बनावे के चक्कर, संउसे घर बा लीन।
ना बांची कुछ लोक के, घर आ बइठी चीन।।

मंच मिलल किशोर हाथ, गइले अपने गीत ।
बनल बाड़े ऊ आज त, आपन बड़का मीत ।।

देखऽ हाल किशोर के, गावस अपने गीत ।
बइठ बाजार बीच में, भूल गइल सब रीत ।।

गणेशनाथ तिवारी 'विनायक'
सिवान, बिहार

गणेशनाथ तिवारी 'विनायक'

चुनाव

जीतते चुनवुवा पराई गइले नेताजी,
भोट लेके हमके भुलाई गइले नेताजी।

कइले रहले वादा ऊ नोकरी रोजगार के,
अचके मे जवार से हेराइ गइले नेताजी।

अंधभक्त, चमचा के ज्ञान बा ओराइल
जबसे विधानसभा धइले बाड़े नेताजी।

सगरो विकास अब कागज पर हो जाई,
अनपढ़ पढ़ल कलम उठवले बाड़े नेताजी।

जनता के वोट सब बेकार हो गइल बा,
बे चुनले मंत्री अब चुनाइल बाड़े नेताजी।

परिवारवाद पर ज्ञान बांटे वाला मय लोग,
अपना ओरि झांके में भुलाइल बाड़े नेताजी।

बुरबक बनवले बाड़े तोहके मय नेता गणेश,
आपन घर भरे खातिर धधाइल बाड़े नेताजी।

2.

रउआ कइनी ना कतहु विकास नेताजी,
रउआ लागल बाटे वोट के पियास नेताजी ।

उज्जर चोला आ करिया बा तनवा,
जनता के ठगे वाला चंचल बा मनवा,
चारुओर लोग भइल बा हताश नेताजी,
रउआ कइनी ना कतहु विकास नेताजी ।

नाला के पइसा खइनी, खइनी पैखाना के,
दामवा बढ़वनी देखी मय - मयखाना के,
बाकिर बढ़ल नाही आगे दरखास नेताजी,
रउआ कइनी ना कतहु विकास नेताजी ।

चमकत बा महल राउर ,गोटाइल मोटरिया,
गरीबन के फुटि गइल करम के कोठरिया,
खाली झूँठहु के रोवतानी आजु नेताजी,
रउआ कइनी ना कतहु विकास नेताजी ।

भाषण में लिहनी जवन बिकास के नामवा,
वादा नाही पूरा भइल, पूरल नाही कामवा,
रउआ भइल बानीं साँचो, जुमलेबाज नेताजी,
रउआ कइनी ना कतहु विकास नेताजी ।

शशिलता पाण्डेय सुभाषिनी

बलिया- उत्तर प्रदेश

शशिलता पाण्डेय सुभाषिनी

कहवां हेरा गइल

अब कहवां हेरा गइल बा उ धुन प्यार के....?

काहे अब सभका भीतर ईर्ष्या के आगी जरे लागल,
नफ़रत ज्वाला में अब आपन अपने के ताड़े लागल |

कहवां भुला गइल बा उ गुन आदर दुलार के....?

काहे बड़न के त्याग आ छोटन के दुलार घटे लागल,
काहे तनी - तनी खातिर, भाई - भाई से बाँटे लागल.. ?

कहवां भुला गइल बा उ दिन त्यौहार संयुक्त परिवार के ?

पूत विरह में तड़पत बाड़ी माई के करेजा फाटे लागल,
चार दिन के बहुरिया, माई से बेटा के दूरी बाँटे लागल |

कहवां भुला गइल बा उ गुन पूत में जैसे श्रवन कुमार के ?

एके माई के पूत सहोदर, आपन - अनकर घाटें लागल,
अब चाचा - भतीजा रिश्ता, पटीदारी होके काटे लागल |

कहवां भुला गइल बा उ गुन आजा - आजी के दुलार के ?

बाबा - दादी बोझ बनल बा, वृद्धाश्रम में दिन काटे लागल,
चैन गवांई पोसल बबुआ, पढ़ लिख परदेशी होखे लागल |

कहवां भुला गइल बा उ गोदी चाचा - फुआ के दुलार के ?

अब कलयुग के जमाना, बेटा माई - बाप के डांटे लागल,
खर्चा माई बाप के जोड़ - जोड़, भाई - भाई में बाटें लागल |

कहवां भुला गइल बा उ बाबा के बैठकी दुआर के..?

खेती छोड़ लोगवा रोजगार खातिर, शहर में जुटे लागल,
बस खाली मेहरारू बेटा - बेटी खातिर उहा खटे लागल |

कहवां भुला गइल बा धुन, होरी -चैता के गवनिहार के..?

अनिरूद्ध कुमार सिंह
धनबाद- झारखण्ड
सचल दूरभाष- 9931562396

अनिरूद्ध कुमार सिंह

केकरा के कही हम अपना

अँचरा में अरमान समेटें, मर्यादा के पहिनें गहना ।
फूट फूट के रोये लाडो, केकरा के कहीं हम अपना ।।
चूर चूर हो गइल घरौंदा,
टूट गइल बाबुल के सपना ।
छूटे के बा महल अटारी ।
तोंता मैंना लागे गपना ।
बाबूजी भी नाहीं बोलस, के बोली बबुनी तनि सुन ना ?
फूट फूट के रोये लाडो, केकरा के कहीं हम अपना ।।
माँ पापा के साथ न होई,
आपन कोई खास न होई ।
परदेशी बन जीना मरना,
ममता के आकाश न होई ।
गुजरल पल के भूलीं कइसे, केंगा जीयब माई कहना ।
फूट फूट के रोये लाडो, केकरा के कहीं हम अपना ।।
बचपन यौवन संग गुजरनी,
केकर ना हम कइनी कहना ।
प्रेम नेह सब कहाँ भुलाइल,
बेदर्दी काहे सब अतना ।
प्रेमभाव दुलार कहाँ गइल, सूना सूना बा घर अँगना ।
फूट फूट के रोये लाडो, केकरा के कहीं हम अपना ।
सोन चिरइया कह पगली के,
भाई रोज चुँगावस दाना ।
जेके जेके आपन कहनी,
सब काहे लागे बेगाना ।
जीवन कौने ओरी लागी, बाबुल काहे लागे अदना ।
फूट फूट के रोये लाडो, केकरा के कहीं हम अपना।।

हाय बिधाता रउवे सुन लीं,
लउकत नइखे आगा पाछा ।
सब मिलकर के करे बिदाई
जिनगी लागे आज तमाशा ।
सखी सुने ना आज चिरौरी, केहू नइखे मानत कहना ।
फूट फूट के रोये लाडो, केकरा के कहीं हम अपना ।।

Estd. 2023

STUDYAATRA PVT. LTD. PRESENTS

+91 8423243389

Ballia CommerceNomy

Kyuki........ Commerce se sab hota hai

ACADEMY OF COMMERCE, MANAGEMENT AND BANKING

FOUNDER & DIRECTOR
Dr. RAKESH KUMAR VERMA
Assistant Professor (Ex.), SMMT PG College, Ballia
Commerce Faculty- Heritage School, Jamua, Ballia
PhD (Accounting & Finance) (RGIPT)
NET/JRF Commerce
M.Com (Delhi School of Economics- DU)
B.Com (H) (Hansraj College- DU)
Jawahar Navodaya Vidyalaya- Ballia

YOU DESERVE THE BEST EDUCATION

COURSE FEATURES
1. Online Live Classes
2. Recorded Video Access
3. Offline Classroom Session
4. Unlimited Mock Tests
5. Medium- Hindi and English
6. Access on Web and Android App

TEST SERIES
1. Chapterwise Tests
2. Full Syllabus Test

STUDY MATERIALS
1. Class Notes (PDF)
2. Question Practice Sheet (Chapterwise- PDF)

DOUBT SESSION
-Special doubt session facility

B.COM, M.COM
11th & 12th Commerce

- CUET Commerce (UG & PG)
- UGC NET/JRF (Commerce & Management)

Enroll Now

ADMISSION KIT*

Worth ₹15,299/- Free

- Worth ₹14,000 Add-on Courses
- Worth ₹500 Membership Fees Free
- Worth ₹100 Discount Coupon
- Worth ₹90 CommerceNomy Notepad
- Worth ₹10 One Ball Pen
- Worth ₹599 CommerceNomy Brand Logo T-shirt

CommerceNomy WORLD

STUDYAATRA A KNOWLEDGE JOURNEY
Commerceenergy Freshers' Party
PADHAKU KAMP SELF STUDY HOME
CareiTY CARE-COMMUNITY-CHARITY
NEXSTART Farewell Event
KamerceKraze Ballia CommerceNomy Mahotsav
Quest Lecture Series Baat ExpertsKey
ComIIQuiz Ballia's Biggest Commerce Quiz
commercestalk Talent Search Examination

1st Time In Ballia City

Attend Live Classes through Ballia CommerceNomy Android App

GET IT ON Google Play

FREE Demo for 1 Days

Follow us

* Terms & Conditions Applied

पताः द्वारिकापुरी कालोनी (नियर चन्द्रशेखर आजाद ITI) – बलिया 277001

www.commercenomy.com +91 8423243389 helpcommercenomy@gmail.com

प्रेरणा अनमोल
सारण, बिहार

प्रेरणा अनमोल

सुन्दर देसवा

सेनुरिया से चमकेला,
आकासवा में सुरूजवा,
घरे - घरे बोलेलन, सभे,
गइइन के बछड़वा,
देखी - देखी छूट गइल,
सुंदर देसवा,
हो आपन सुंदर देसवा...

कहीं खेलि लड़कन,
कहीं सांझ बईठेला,
हल चलाईके,
खेतवा में बीज बँटेला,
सांझ के अरतिया अउर,
निमिया के डरवा,
देखी - देखी छूट गइल,
सुंदर देसवा,
हो आपन सुंदर देसवा...

पूजेनी सभी जन,
सभे भगवान के,
हृदय में प्रीत बा,
सभे संसार के,
एहिजा ना बाड़े कोई,
सुनेके दुख - दरदवा,
देखी - देखी छूट गइल,
सुंदर देसवा,

हो आपन सुंदर देसवा...

दरश के तरस गइल,
हमार अँखिया,
आपन लागे कब बुलइबु,
हे गंगा मईया,
देखी - देखी छूट गइल,
सुंदर देसवा,
हो आपन सुंदर देसवा...
सुंदर देसवा...।

शिवम तिवारी

रिसड़ा- कोलकता

शिवम तिवारी

का हो भाई ?

का हो भाई, हमार दरद तोहरा कब बुझाई ?
जहवाँ तू सयान भइलऽ, गइलऽ उहे जगह भुलाई ।

परदेस से आपन नेह लगाके, दिहलऽ गउवाँ के बिसराई,
खा के इहवें के दाना - पानी, गइलऽ कईसे तू भुलाई ?
का हो भाई, हमार दरद तोहरा कब बुझाई ?

इहवें के कुल देवता - बरहम से, असीरबाद लेके परदेसे गइलऽ,
परदेसे के हो के रहि गइलऽ, गइलऽ गउवाँ के भुलाई ।
गाँव के सभे चाचा - बाबा, अबहियों तोहार बाट जोहेले,
ताकत - ताकत रहिया तहरो, दिहऽले आपन उमिर बिताई ।
का हो भाई, हमार दरद तोहरा कब बुझाई ?

गाँव के सगरो खेत - खरिहान, बाग - बगईचा, चट्टी - बजार,
लमहर - चाकर घर - दुआर तेज के, कइसे —
सहर के डिब्बा नियन घरवा में, गइलऽ तू समाई ?
का हो भाई, हमार दरद तोहरा कब बुझाई ?

अरे, मानऽतानी मजबूरी बा, रोजी - रोजगारो जरूरी बा,
गाँव में कहाँ रोजगार मिलेला ? सहर गइल मजबूरी बा ।
बाकिर निहोरा बाटे इहे 'शिवम' के, जहवाँ रहीं खूब कमाईं,
बस एगो रोजगार के खातिर, अपना गाँव के जनि बिसराईं ।"

मनीष पाण्डेय 'कनक'

सागरपाली- बलिया

मनीष पाण्डेय 'कनक'

बिसरल ऊ दिन

आन्ही झकोरा में, गीरत टिकोड़ा,
आम बिनवाइया लरिकाईया अधीन बा ।।

के जाई बारी में, खेतवा बधारी में,
आजू के ई पीढी, मोबाइले में लीन बा ।।

चिका, कबड्डी, कौड़ी लुटाई भी,
ओल्हा पाती खेल अब बिसरल ऊ दिन बा ।

गुली, डांटा, कांचा निहारले ना लाऊके,
अब खेल लरिकाईया के छिनले मशीन बा ।
बाचल खरिहानी ना, नदिया के पानी भी,
महुआ जमुनिया से गऊओ बिहीन बा ।

पुतरा आ पुतरी से, दियरी पताईया से,
खेले ना केहू दलानी जनहीन बा ।
बने भटकोइया ना, केहू पुछवाइया अब,
फरि के सुखा जाले लोटत जमीन बा ।

दूध दही माठा मकई आ बाजरा छोड़ी,
पिज्जा आ बर्गर देखी मन अब हीन बा ।
ओसही भुजला जस पितरी आ फुलाहा छोड़ी
आजू के ई पीढ़ी पाई खुश अब टीन बा ।

दीहिती लवटाई प्रभु सोना अस दिन फीनू
देखी ई दासा अब मन बड़ा खिन्न बा ।

अमर वर्मा

विद्यार्थी- परास्नातक हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
गांव- कछुआ, पोस्ट- बसरिकापुर
थाना- दुबहड़, बलिया
चलभाष- 9335323968

अमर वर्मा

मईया तोहके गोड लागेनी

मईया तोहके गोड लागेनी
घाट प ताहरा रोज आवेनी
नहा - धोआ के हाथ जोर के
दू - चार गो फूल चाढ़ावेनी।

तहरे घाट प ले के मोटरी
सरफ अउर सोटा के गठरी
फींच - मार हम धोई कापड़ा
केमिकलवो से दाग छोड़वनी।

हमारा शहर के नाली - नाला
जेकर पानी एतना बासाला,
नाक मूद के निकले के पड़े
उहो बह के तहरे में जाला।

ताहार पानी साफ जे करे
झिंगा, गोड़रा, मछरी रानी,
हम ऊ लोभी मानुष हई
उहनी के हम मार के खानी।

घाट प ताहरा रोज आवेनी
मईया तोहके गोड लागेनी...

तहरे से हम लेके पानी
सगरो आपन खेत पटवनी
जेने से तू ना निकलेलू

ओने फिर हम नहर बनवनी ।

आपन घर बनवावे खातिर
तहरे से हम बालू लिहनीं,
अपने फायदा के खातिर त
ताहरा ऊपर बांध बनईनी ।

तहरे जल से भर के गगरा
शंकर जी के हम नहवईनी,
तहरे जल बोतल में भरके
देशा - देशी में बेचवईनी ।

हम ऊ लोभी मानुष हई
जे फायदा ताहार खूब उठईनी,
आपन पाप उतारे खातिर
जल में ताहरा डुबकी लगईनी ।

मईया तोहके गोड लागेनी
घाट प ताहरा रोज आवेनी...

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

मैरिटार, बलिया
सचल दूरभाष- 9415682126

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

देवी गीत

सिंह के सवारी छोड़ि, डोलिया से अइली,
मईया के किरिपा अपार।

आगे माई, डोलिया से आके मोरा अंगना उतरली,
अंगना में होखे जय जयकार।।

नवो महरानी मिलि दुर्गा रूप धइली, असुरवृत्ति मानि जइहें हार।
आगे माई, सत के कृपाण से असत के अन्हरिया के, खोजि - खोजि करिहें संघार।।

दुनिया क दुरगति दूर करिहें मईया, देइ सद्बुद्धि उपहार।
आगे माई, ज्ञान के प्रकास पूरे दुनिया में भरि दिहें, होखे नाहीं पइहें तकरार।।

जुद्ध नाहीं होखे फइले प्रेम भाव सगरे, नाहीं घटे केहू के दुलार।
आगे माई, धरती प रहे वाला सभे भाई - भाई हवें, टूटे ना सनेहिया के तार।।

नवो दिन पूजा,
नवो राति जगरनवाँ, देखि हिया हुलसे हमार।
आगे माई, जगत के माई जग तारनि मईया, सुनी 'रसराज' के पुकार।।

बृजमोहन प्रसाद अनारी

सुखपुरा- बलिया

बृजमोहन प्रसाद अनारी

समइया बलवान

अगुंरी पर सबके, नचवलसि हो हई समइयाऽ बलवानवाऽ----टेक।

कहल बा जेकरा के, घट - घट के बासी,
अगम, अगोचर, अद्भुत, अविनाशी,
उनहूं के ठोकर खियवलसि हो----टेक।

सत्य परेमी हरिचनऽ राजा दानी,
उनहूं के रानी बनली नवकरानी,
घाट पर के डोमड़ाऽ, बनवलसि हो----------टेक।

गीता के गियान देके, दुख जे उबारलऽ,
कंस अत्याचारी के जे छने भर में मारलऽ,
हाथे बहेलियन के मरववलसि हो----------टेक।

धरम धुरंधर, धरम धारी धरमराज जी,
राजपाट छुटल मये, छुटल समाज जी,
बहुत दिनन तड़पवलसि हो-----टेक।

करजोरि घुमि - घुमि ठोकले सलामी,
गोड़ लगले गले मिलले, कके जयरामी,
तबो अनारी कहववलसि हो-----टेक।

(२)

ना बुझाताऽ मितऊ

इहे सोचि सोचि मनऽ, अंउंजाता मितऊ,
इ जमाना काहां जाताऽ, ना बुझाताऽ मितऊ----टेक।

बेटा ना बाप चिन्हे, बेटी ना माई,
भाई ना बहीनि चिन्हे, मरद ना लुगाई,
बाबू माई जनमा के, पछताता मितऊ------टेक।

कइसहूं कमाये के, लागल बा हारा बाजी,
डेगे - डेगे पर, लउकतावे रंगबाजी,
रिश्ता नाताऽ रोजो - रोजो अरुआता मितऊ------टेक।

परमासनेह भइल, इजति बंचावल,
अपने लोग फूंकता, आपन घर छावल,
गलती करतावे उहे ठोंठियाता मितऊ------टेक।

गते से रहता जे, इजति बंचा के,
दू कवर खाके अलोता लुका के,
उ अनारी हवे छोड़, कहाता मितऊ------टेक।

राम बहादुर राय
भरौली- बलिया
सचल दूरभाष- 9102331513

राम बहादुर राय

चढ़ते चइत नाही, अइले हो रामा

चढ़ते चइत नाहीं, अइलन हो रामा
पिया परदेसिया
पिया परदेसिया हो, पिया परदेसिया
चढ़ते चइत नाहीं, अइलन हो रामा
पिया परदेसिया !

आम बउराइल, महुइया कोंचाइल
कइसन हवा बहल, रोंवा भरभराइल
बीत गइले फागुन, ना आइल हो रामा
पिया परदेसिया !

झरल पतइया, सुखल रहल डढ़िया
मोजर से मातल, आमवा के डढ़िया
काटे धावे महल अटरिया, हो रामा
पिया परदेसिया !

कबो लागे गरमी, कबो लागे ठाला
रहि - रहि बिरहन के मन छपिटाला
पिया बिना जिया मरमराइल, हो रामा
पिया परदेसिया !

रहि - रहि मन हमार, खूबे लकराइल
कहाँ जांईं का करीं, मन अफनाइल
पिया के खबरियो, ना आइल हो रामा

पिया परदेसिया !

सूखल डांठ नियन, देंहियां झुराइल
पिया परदेस जाके, हमके भुलाइल
सोचि - सोचि जिया तड़फड़ाइल हो रामा
पिया परदेसिया !

पिया परदेसिया हो पिया परदेसिया
चढ़ते चइत नाहीं, अइलन हो रामा
पिया परदेसिया.....
पिया परदेसिया.....हो रामा !

डॉ. गजाधर शर्मा 'गंगेश'

नंदगंज, गाजीपुर

सचल दूरभाष- 8601449738

डॉ. गजाधर शर्मा 'गंगेश'

माई

अन्न - धन से घर - बार ब भरल
सोहरल वंश वृक्ष बा फरल
तबो आवे नाही निंदिया नयनवा में,
कुल्हुरी माई तोहरा बिनु हम भवनवा में।

लोग कहे बाबू के सूरज, तोहके उनकर जोती,
हीरा के संग दमदम दमके, ओइसे जइसे मोती
बनिके घरवा के संझबाती,
जरलू अस जस घी क बाती,
तुलसी चउरा प क दीयना अस अंगनवा में,
कुल्हुरी माई तोहरा बिनु हम भवनवा में।

दान - पून, तीरथ - बरत के संग पूजा - पाठ करवलू,
तब जाके केतना सांसत से हमहन के जनमवलू,
सगरो ओढ़ि के सिर पर भार,
तजिके सगरो सउख - सिंगार,
भइलू चुनरी से लुगरी जहनवा में,
कुल्हुरी माई तोहरा बिनु हम भवनवा में।

बिन तोहरे के जे देहरी प बइठल राह निहारी,
गलती पर चांटा जड़ी फिर रो - धो के पुचकारी,
के जे रूठला पर दुलराई,
चूमी - चाटी गले लगाई,
के बसाई लेके तोहरा अस परनवा में,

कुल्हुरी माई तोहरा बिनु हम भवनवा में।

साध लगल बा सपना में ना तू सदेह चलि अइतू,
दे अंचरा के छांह तू अपना ममता से अघवइतू,
माथा हाथे से सहलइतू,
तन - मन के सब थकन मिटइतू,
तरसीं लोटे बदे तोहरे चरनवा में,
कुल्हुरी माई तोहरा बिनु हम भवनवा में।

हमहन खातिर बेद रिचा तू आ गीता क बानी,
हम त भाग्य विधाता मानीं लोग कहे कल्यानी,
आ फिर प्रेम - सुधा बरसा द,
कीरती गूंजे जे से धरती गगनवा में,
कुल्हुरी माई तोहरा बिनु हम भवनवा में।

डॉ0 राम सेवक 'विकल'

डॉ. रामसेवक विकल
डॉ० रामसेवक विकल साहित्य सेवा ट्रस्ट (न्यास)
इसारी सलेमपुर बलिया (उ०प्र०)
चलभाष - 9918206377

आदित्य कुमार 'अंशु'

सोच

नाहिं सोचल समझल
नाहिं सोचल, समझल तू पहिले बलम,
जब बुझाइल त देरी बहुत हो गइल।

अब कपारे पर आइल विपतिया बहुत,
सगरी बुद्धि कहाँ से कहाँ खो गइल।

बा जुटल भीड़ घरे दुआरे पिया,
आजु खइलो पियल अब दुलभ हो गइल।

बेटी बेटा से भरल पुरल बा भवन,
नाती पोता त घर में बहुत हो गइल।

कइसे जिनगी के दिन रात काटीं सजन,
सुख के घर आपन बड़हन शहर हो गइल।

पहिले आशिष मिले दूधे पूते जिअ,
अब ई आशिष बहुते महँग हो गइल।

कहाँ जाई आ जाके कहाँ रहीं जाँ,
छोड़ि के कहीं गइलो दुलभ हो गइल।

द्वारा- आदित्य कुमार 'अंशु'

2.गीत

केहू जरो चाहे मरो चाहे अगियो लगावे,
बाकिर हम आपन झोपड़ी सजाइब मितवा
हमत जानतानी केतने का नीक नाहिं लागे,
खाइल - पियल देखि छतिया में उनका आगि लागे.
नीमन पहिरि ओढ़ि हम ललचाइब मितवा ।
चाहे केहू लड़वावे चाहे केहू अझुरावे,
केहू भाई संगे मिलि घर हमरे जरावे
बाकिर भाई भाई माथ ना फुटाइब मितवा ।
अब त अपने जमल बड़ उत्पात करे,
ईंटा पथर लाठी लेके हमरे पर टूटी परे
हम अपने पर हाथ ना उठाइब मितवा ।

डॉ0 नवचन्द्र तिवारी

चिलकहर- बलिया

डॉ० नवचन्द्र तिवारी

संगे जाये वाला नईखे

आखिरी समइया में, केहू ढोवे वाला नईखे ।
छूटि जाई जन - धन, संगे जाए वाला नइखे ।।

अइलऽ तूं अकेल इहां, जाहूं के अकेल बा
अइलो प बाबू इहां, लउकत झमेल बा
आंखि खोलि देखऽ कहां, मकड़ी के जाला नइखे ।
आखिरी समइया में, केहू ढोवे वाला नइखे ।

दियवा तबे ले जरी, जइ घड़ी तेल बा
संसिया का चरखी से, जइ घड़ी मेल बा
तहरा कुकरम के, केहू धोए वाला नइखे ।
आखिरी समइया में केहू ढोए वाला नईखे ।

कइके सुकरम तूं, खुद के निखार लऽ
जेतना ले बने, संसार के संवार लऽ
नेह दीप बारऽ यानी, ओकरा प ताला नइखे ।
आखिरी समइया में, केहू ढोवे वाला नईखे ।
छूटि जाई धन - जन, संगे जाए वाला नईखे ।

डॉ0 जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

भृगु आश्रम- बलिया

चलभाष- 9935108535

डॉ० जनार्दन चतुर्वेदी 'कश्यप'

कहलो ना जाला कईसे कह के सुनाई

टूटही मड़इया में जिनिगी बिताईं,
थाकल बदनवा के पेंचहीं खटाईं,
धरती ई लेवा असमनवे बा रजाई,
कहलो ना जाला .....।

होत भिनुसारे हम काम करे जाईं,
दिन भरि घमवा में देहिया ठेठाईं,
डूबेला किरिनिया तब घरवा के आईं,
कहलो ना जाला.....।

अवते दुआर पर मउगी के बुलाईं,
बोली सुनि पानी लेइ लपकत आई,
मिलल मजूरी नाहीं कइसे ई बताईं,
कहलो ना जाला .....।

छव गो लरिकवन संगे उनुकर माई,
नइखे बुझात बोझा कइसे उठाईं,
भारी खरचवा बाटे एगही कमाई,
कहलो ना जाला.....।

देखि के लरिकवन के नैन भरि आई,
कबो - कबो इनिके उपासहीं सुताईं,

अइसने विपति से बा जीवन के लड़ाई,
कहलो ना जाला.....।

बड़ परिवार रहले रोजे दुःख आई,
छोट परिवार सभ दिन हंसी - मुसुकाई,
'कश्यप' कहेले कुनबा छोटे अपनाईं,
कहलो ना जाला.....,.....।

योगः कर्मसु कौशलम्

9839159190

फ़ीनिक्स स्कूल

- ★ अनुशासित वातावरण
- ★ योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक
- ★ शत-प्रतिशत परीक्षाफल
- ★ क्रियाकलाप आधारित शिक्षा
- ★ वैदिक गणित एवं अबाकस कक्षाएं

Science | Commerce | Humanity

कक्षा- नर्सरी से (10+2)

प्रवेश प्रारम्भ 2026-27

सादी तिवारी
जिला टॉपर (Hindustan Olympiad)

जया वर्मा
जिला टॉपर (PCM)

मुख्य शाखाः निमिया पोखरा (कटरिया), अलावलपुर- बलिया | शाखाः कृष्ण-सुदामा नगर (भगवानपुर)- बलिया

GSTIN.: 09AEAPY1980M1ZT

9140302496
8004776005

PRATAP

PRATAP ENTERPRISES

Paswan Gali, Garwar Road, Mulayam Nagar, Ballia

कुमार जगदली 'सुनील'

व्यंग्यकार, गीतकार कवि
मूल नाम : सुनील जायसवाल
रायपुर, छत्तीसगढ़
चलभाष -7999515385

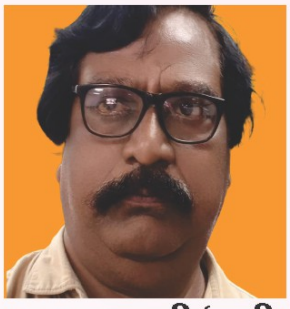

कुमार जगदली 'सुनील'

अवधपुरी में बाजे रे बधईया

फागुन बितल आइल चइत महिनवा
चइत महिनवा हो चइत महिनवा

फागुन बितल आइल चइत महीनवा
अवधपुरी में बाजे बधईया
बाजे बधईया हो बाजे बधईया
राम जी लिहले जनमवा
राम जी लिहले जनमवा हे रामा
रामजी लिहले जनमवा

चइत महिनवा हो चइत महिनवा
राम जी लिहले जनमवा
बाजे बधईया हो बाजे बधईया
अवधपुरी में बाजे बधईया

कौशिलिया सुत दशरथ ललनवा
रामजी लिहले जनमवा
रामजी लिहले जनमवा हे रामा
रामजी लिहले जनमवा
बाजे बधईया हो बाजे बधईया
रघुकुल के अंगनवा हे रामा
रघुकुल के आंगनवा

हिलीमिली कैकई सोहर गा वै
सुमितरा गावे बधईया
सुमितरा गावे बधईया हे रामा
सुमिततरा गावे बधईया
रामजी लिहले जनमवा हे रामा
रघुकुल के आंगनवा -
रघुकुल के आंगनवा हे रामा
रघुकुल के आंगनवा

दशरथ जी लुटावे मोती सुवर्ण
माणिक के कँगनवा
माणिक के कँगनवा हो
माणिक के कँगनवा हे रामा
माणिक के कँगनवा
धोबीन चमाइन बली बली जाएं
झूमी झूमी गावे सोहरवा
झूमी झूमी गावे सोहरवा हे रामा
झूमी झूमी गावे सोहरवा

बाजे बधईया....
अवधपुरी में..
कौशिल्या पुनि पुनि चूमे ली लिलरवा
मंथरा उतारे बलईया
मंथरा उतारे बलैइया हे रामा
मंथरा उतारे बलईया
अवधपुरी में बाजे रे बधईया

सुशीला पाल
बलिया- उत्तर प्रदेश

सुशीला पाल

का - का जतन कइलीं

का - का जतन कइलीं / घरे अउरी बहरा ! - 2
कामे ना आइल कवनो - 2
अन्हरा के पहरा !!
का-का ...

थाती लुटाइल सज्जी, अँखिए के सोझा
थाकि गइले सभे - पीर, बैद, गुनी, ओझा

-- अगिया में जरि गईल - 2
देंहिया निखहरा !!
का-का ...

एने अझुराईल, कबो , ओने अझुराईल
मनवा के सँगे - सँगे, तनवो नासाइल

-- अइसन पकड़ले रहे - 2
माया के लसहरा !!
का-का ...

कहेली 'सुशीला', जेही बहकी, ए भाई
जिनगी अमोल ऊहे, झुठहूँ गँवाई

-- आगे बा खाई, पाछे - 2
कुइँयाँ बा गहरा !!
का-का ...

डॉ. कादम्बिनी सिंह

शिक्षिका आ लेखिका

सचल दूरभाष- 9415681901

डॉ. कादम्बिनी सिंह

घर के बहरी

घर के बहरी कदम के निसान जाता
तूं बुझत नइखऽ हमरो परान जाता

बेंचि के खेत बबुआ किसान जाता
धरती माई के छाती में बान जाता

श्याम के मय बिसरते इ का हो गइल
गीत जाता बंसुरियो के तान जाता

झूठ डंका बजाके चलल जइसहीं
साँच अगुता के होके हरान जाता

के सहेजी चिरइयन के पंखवा सुघर
रोज गंउएं से हमरा विमान जाता

नुरैन अंसारी
दिल्ली

नुरैन अंसारी

नैन

नैन लोर से भरल बाटे,
केहू त मन परल बाटे।

प्रीत निभावल मुश्किल बा
किरिया खाइल सरल बाटे।

मन के टूटल घवद पर,
आस पुरनका फरल बाटे।

ताखा पे दूर कहीं फिर से,
दियना कौनों जरल बाटे।

सपना टूट गइल दिनवे में,
रात अनहरिया ढरल बाटे।

"नुरैन" दुनिया मुहब्बत के,
पीरा में ई बस गढ़ल बाटे।

2. मन शहर के सांचा में ढल ना सकल,
गांव कबो दिल से निकल ना सकल।

टुटि गइल दिल, जब हाथ से तोहरे,

उम्मीद के दिया फिर, जल ना सकल ।

हंसते हंसावत लोरा गईल अँखिया,
दरद फेर हमसे संभल ना सकल ।

चहनी बहुत कि राउर साथ ना छूटे,
किस्मत के लिखल बदल ना सकल ।

उठे लागल अंगुरी, ईमानदारी पर जब से,
सन्मति से घर फिर चल ना सकल ।

रामनाथ बेखबर

संपर्क - 8/1, एस. एम. बाई लेन,
बाँसबगान, चापदानी
पोस्ट - वैद्यबाटी, जिला - हुगली
पिन - 712222 (पश्चिम बंगाल)
फोन नंबर - 7980630154

रामनाथ 'बेखबर'

जवानी के दिन

जवानी के दिन जबसे आइल बा भउजी,
करेजा में केहू समाइल बा भउजी।

भुला के भी मत करिहऽ छेका के बतिया,
कहीं अउरी मन अझुराइल बा भउजी।

पढ़े में लिखे में कहाँ मन बा लागत,
न जाने कहाँ ई भुलाइल बा भउजी।

निरेखल करिले सदा रूप उनकर,
मगर प्यास कहँवा बुताइल बा भउजी।

बस उनका अईला से अइसन बुझाता,
अँजोरा दुआरी पर आइल बा भउजी।

2.

घर से बाहर निकल के भी देखऽ कभी,
पाँव पर खुद के चल के भी देखऽ कभी।

प्यार का चीज हऽ जान जइबऽ सुगन,
ई डगर पे फिसल के भी देखऽ कभी।

हर कलेजा में बस तहके गम ही मिली,
बर्फ जइसन पिघल के भी देखऽ कभी।

रंग हरपल ई दुनिया के बदलल मिली,
रंग आपन बदल के भी देखऽ कभी।

कब ले कुटिया के खूंटी पे टँगबऽ सपन,
कवनो सपना महल के भी देखऽ कभी।

तौसीफ अहमद

ब्रह्मपुर, बक्सर- बिहार

तौसीफ अहमद

घरेलू संसद के गृहमंत्री

पढ़ - लिख के अभिमान में मत रहऽ,
गँवई बोली से अनजान मत रहऽ ।

काम बिना तोहार नाम ना होई,
खाली हवाई पर गुमान में मत रहऽ ।

मजूरी कऽ के कमइअ, खइअ,
दुसर के धन के शान में मत रहऽ ।

गाँव के धूरा - बाड़ी भुलाई के,
शहरिया रंग में रंगाईल मत रहऽ ।

चोरी के धन पास रहि ना पाई,
अइसन माया पर गुमान में मत रहऽ ।

नेकी के रस्ता छोड़ि के कबो,
बनबऽ ऋषि ई अहंकार में मत रहऽ ।

बाबू - आजी, माई के सेवा करऽ,
उनकर आशीर्वाद से अनजान मत रहऽ ।

तोहार करम पर टिकल बा सब,
भाग के चाल पर तनी हैरान में मत रहऽ ।

2.

बात बा समता के, नेह आ ममता के,
घर के उजियार, बाड़ी औरत जी ।

बहिन आ बेटी के, बहु आ माई के,
हर रूप के सार बाड़ी औरत जी ।

दुख के घड़ी में सुख के लड़ी में,
हिम्मत के दीवार बाड़ी औरत जी ।

नौ महीना पीर, आ दिल में धीर,
जीवन के उपहार, बाड़ी औरत जी ।

चूल्हा चौका हाथे दुनिया के साथे,
कंधा से कंधा दे चले ली औरत जी ।

रूई जइसन नेह लोहा जइसन देह,
हिम्मत अपार रखले बाड़ी औरत जी ।

हँसी भी बाँटे ली आँसू भी सहे ली,
सबके फ़िकिरमंद बाड़ी औरत जी ।

घर के बगिया में नेह के खुशबू,
जीवन के बहार बाड़ी औरत जी ।

रहमत भी हई अजमत भी हई,
संसार के आधार बाड़ी औरत जी ।

संतरी भी घरेलू संसद के गृहमंत्री भी,
बीटो के पावर लेले बाड़ी औरत जी ।

कायनात के शान, जग के पहचान,
जीवन के आधार बाड़ी औरत जी ।

मनोज भावुक

कवि, संपादक आ टेलिविज़न पत्रकार

दिल्ली

मनोज भावुक

जिनिगी

बहुत नाच जिनिगी नचावत रहल
हँसावत, खेलावत, रोआवत रहल

कहाँ खो गइल अब ऊ धुन प्यार के
जे हमरा के पागल बनावत रहल

बुरा वक्त में ऊ बदलिये गइल
जे हमरा के आपन बतावत रहल

बन्हाइल कहाँ ऊ कबो छंद में
जे हमरा के हरदम लुभावत रहल

उहो आज खोजत बा रस्ता, हजूर
जे सभका के रस्ता देखावत रहल

जमीने प बा आदमी के वजूद
तबो मन परिन्दा उड़ावत रहल

कबो आज ले ना रुकल ई कदम
भले मोड़ पर मोड़ आवत रहल

लिखे में बहुत प्राण तड़पल तबो
गजल - गीत 'भावुक' सुनावत रहल

राघवेन्द्र प्रकाश 'रघु'

बक्सर- बिहार

राघवेन्द्र प्रकाश 'रघु'

कुकुर

आजकल के जमाना देख के मन भकुआ जाता। शौक के कवनो ओर - छोर नइखे रह गइल। जहाँ पहिले दुआर पर गाय - गोरु के रँभाईल सुभ मानल जात रहे, ओहिजा अब कुकुर पोसल जा रहल बा। पहिले स्वागत में कुछु लिखात रहे, मेन दरवाजा के आसपास अब कुकुर से बचे के चेतावनी लिखल लउकत बा। आ तनी तवज्जो देखल जाव... कुकुर न भइल, कवनो वीआईपी (VIP) मेहमान भइल!

हमार पड़ोसी भइया जी, जे हर बात में 'राजधानी' के रट लगावेले, ऊहो एगो करिया कुकुर ले अइलन। दाम पूछनी त अइसन गरबइलन जइसे कवनो मंगल ग्रह के सौदा क के आइल होखस — "अरे का पूछीं भयवा, 12000 के त खाली बच्चा रहे, 14000 त ओकरा दवाई - बिरो में लाग गइल। खास पटना के शौकीन घर के नसल (Breed) ह!"

हमहूँ तनी 'तेल' लगावे खातिर बिना मन के कह देनी — "वाह भइया! मान गइनी। कुकुर त कुकुर बा, एकदम कुचु - कुचु करिया! अइसन स्मार्ट लुक त पूरा जवार में केहु के नइखे। एकदम लाजवाब बा राउर कुकुर!"

एतना सुनल रहे कि भइया जी के 'कॉन्फिडेंस' सातवाँ आसमान चीर दिहलस। अब ऊ अंग्रेजी आ हिंदी के खिचड़ी (हिंग्लिश) बना के कुकुर के खान - पान से लेके ओकरा पखाना तक के 'महिमा मंडन' शुरू कर देहलन। हम बेचारा, भोजपुरी देहाती मनई, जम्हाई लेत - लेत उनकर गप लपेटे लगनी।

मने - मन सोचत रही कि — भाला होखे ई भइया जी के, जे खुद दिन भर कवनो न कवनो नशा में चूर रहेले, माई - बाबू के एकलौता 'कुल - दीपक' (वारिस) हउअन, आ

जिनका घर के शाकाहारी चूल्हा पर कसहूँ दाल - भात चड़त बा... ऊ आज कुकुर के 'डाइट' (Diet) प लेक्चर दे रहल बाड़न!

हँसी त तब रोके ना रुकल जब ऊ कहलन — "देखऽ भाई, एकरा के हम रोज केला, सेब आ गाय के पियोर दूध - भात खियाइला। एकदम सात्विक भोजन! रोज मतलब प्रतिदिन, एको दिन नागा ना!"

हमरा के कृषि के पढ़ाई में 'एनिमल हसबेंडरी' (पशुपालन) वाला मास्टर साहब पढ़ावत रहन कि कुकुर मूल रूप से मांसाहारी जीव ह। आ हमहूँ जवार में देखले बानी कि कइसन करिया - उजर कुकुर अंडा - मांस देखला पर गप - गप लेल लपकावेले। अब भइया जी के ई 'शाकाहारी कुकुर' कवन नया अवतार रहे, ई त भगवानें जानस!

एतने में ऊ 'करिया कुकुर' अपना मालिक के संगे प्रस्थान करे लागल। जाते - जाते ऊ हमरा गली में 'लिक्विड फॉर्म' में पातर पोट्टी (छेरत) करत गइल। जइसे कहत होखे — "बड़ाई त खूब कइलऽ, अब ई प्रसाद भोगऽ!"

हम चैन के साँस लेबे ही वाला रहनी कि नजर पड़ल — हमरा घर के ठीक सोझे, दरवाजा के मुँह पर ऊ कुकुर लिक्विड वाला 'सिंगार' क के गइल रहे। हम मन ही मन कुकुर के पगहा धइले भइया जी के 'गरियावत' गली के बाल्टी - पानी ले के साफ करे लगनी कि बिहान कवनो मान - जान के गोड़ ओकरा में पवित्र मत हो जाव।

अब जाके तनी देह - हाथ धोइब... काहें कि जब गाय - गोरु पोसे वाला खानदान कुकुर के डाइट चार्ट बनावे लागे, त आदमी के भकुआइल तय बा!

राजेश कुमार सिंह 'श्रेयस'

कवि, लेखक, समीक्षक
लखनऊ- उत्तर प्रदेश

राजेश कुमार सिंह 'श्रेयस'

सतनारायन के संघर्ष

रात के बेरा रहे । हमके कहां जाए के बा, ई त हमके पता रहे, बाकी सतनारायण कहां जात रहन, ई पता उनहि के ना रहल।

कड़कड़ात जाड़ा पड़त रहल। सगरी सड़क एकदम सुनसान लउकत रहे। दु - चार गो कुकुर अउर एगो - दुगो घर - दोकान के आगा बइठल गार्ड के छोड़ के एकहु अदमी ना लौकत रहले।

वो सड़क पर सतनारायण के छोड़ के केहू लउकते ना रहे।

सतनारायण गरीबी के कहानी के पात्र ना बनल चाहत रहले। ई सोच के उ दसईपुर से लखनऊ आ गइल रहे। सतनारायण पढ़ाई लिखाई में छोटइये से बहुत तेज रहलें। बाकिर गरीबी के हाल ई रहे कि प्राइमरी स्कूल के छोड़ के, कबो कान्वेंट में पढे के मौका ना मिलल। हां, ई रहे कि इंटर कइले के बाद सरकारी डिग्री कॉलेज से सोशियोलॉजी में एम. ए. के डिग्री ले लेले रहलें अउर गांवे के बगल के प्राइवेट प्राइमरी स्कूल में ढाई हजार रुपया महीना में मास्टरी के नोकरी ध लेले रहे। दुई बरस पहले उनकर बियाह भइल रहल अउर अब एक साल के एगो लईकि के बापू बन गईल रहले।

सब कुछ ठीके - ठाक चलत रहे , लेकिन करोना के मार सतनारायन पर ऐइसन पड़ल कि कुल्हि हिसाब किताब बिगड़ गईल। स्कूल बंद हो गइले स। नोकरी चली गईल। गांव में एको धुर जमीन रहबे ना कइल। एतना पढ़ाई लिखाई क के गांव में मजूरी करें में त लाजे लागत रहे। जहाँ सब केहू मास्टर साहब - मास्टर साहब कहि के बुलाईत त आज कइसन लागित। इ कुल बात सोचके परेशान होत रहले। लेकिन पेट के मजबूरी, रुपिया - पइसा के दिक्कत ना अड़ाइल त लॉकडाउन के हल्लुक पड़ते सतनारायन शहर में आ गइले।

शहर में उनकर आज पहिला दिन रहल। लेबर अड्डा पर खड़ा भइले त टाइम से बिकाईयो गइले। काम मिल गईल। आज पहिला दिन ₹ 250/- के मजूरी मिलन। साँझ भइल त ठेला से ₹ 30/- रुपिया के पूरी लेके खा पी लेहले। बाकिर अभी छत के इंतजाम ना भइल रहे। थाकि के चूर हो गइल रहले। अंत मे फ्लाईओवर के नीचे फुटपाथ पर आपन कम्मल बिस्तर बिछवले। अभी एके झपकी लेले रहले कि गश्ती पुलिस के सिपाही आइल अ एक डंडा कसके पीठी पर जमा दिहले। पुलिस के डंडा से उनकर डिग्री बिलबिला के रो परल।

सतनारायन आपन बोरा - बिस्तर बटोरले अउर आगे बढ़ गईलें। थोड़े दूर आगे एगो सोसाइटी के मार्केट रहे। ओही मार्केट में जाके बरामदा में आपन बिस्तर दुबारा से लगवले। अभी झपकीये लेत रहले कि छः - सात लोग आ गइल। ए बेरी उनकर डंडा से जमके स्वागत सत्कार भइल। संगे - संगे कई गो सवाल उनके ऊपर दगा गईल। उनकर आधार कार्ड मंगाइल, पढ़ाई लिखाई के हिसाब लियाइल। एगो - दुगो लोग सहानुभूति जतवले, बाकी लोग चोर, चिकार, गुंडा मवाली, पागल न जाने का - का उपाधि से नवाज देहले। अंत में सतनारायण उहवों से बगेदा गइले। रात के डेढ़ बज गइल रहे।

हमरा के बनारस जाए के रहे। लइकन - फइकन के लेके महामना एक्सप्रेस ट्रेन पकड़े खातिर घर से निकल गइल रहनी। हमके त जनात रहे जे हम स्टेशन ले जात रहनी, लेकिन सतनारायन ई ना जानत रहले कि उ कहाँ जात बाड़ें। उनकर संघर्ष के यात्रा कहाँ जा के थम्ही।

सुनील कुमार यादव

प्रबंध संपादक
दीया बाती
भोजपुरी, तिमाही, ई पत्रिका
प्रबंधक - फीनिक्स इंटरनेशनल स्कूल
निमिया पोखरा- भगवानपुर, बलिया
सचल दूरभाष - 9839159190

सुनील कुमार यादव

तुलसी गंगाजल

ओकर नाम रहे सूरज। लइका एकदम सोझबक रहे बाकिर अपना काम में एकदम होसियार। एगो कंप्यूटर ग्राफिक्स के दुकान पर काम करत रहे। आजु स्कूल के कुछ काम से हमहूं पहुंचनी ह दुकान प। दुकान में कवनो ग्राहक ना रहुवन। हमार अक्सर आइल गइल होखे त दुकान के कुल्ह स्टाफ से बढ़िया संबंध हो गइल रहे।
जइसही दोकानी प पहुंचनी, सूरज के फोन बाजल।

"बबुआ, जल्दी आउ। आजी के तुलसी गंगाजल देबे के बा। बुझाता बचिहें ना।" फोन पर सूरज के माई रहली।
सूरज सोच में पड़ गइले।

अबहिए आजी के बेमारी में तीन दिन के छुट्टी लेहलही रहनी ह। अब मलिकार से छुट्टी मांगब त तनखाह में से गैरहाजिरी के पइसा कटा जाई। का करीं!
सूरज मलिकार से पूछे में हिचकिचात रहुवन।
हम कस के डटुवीं आ कहुवीं कि ना जइबऽ, आजी के अंतिम घड़ी में भी सोचे लगलऽ।

सूरज जाए खातिर उठुवे आ कहत कहत दुकान से निकल गउवे, "गुरूजी, आजी त आजु ना त काल्ह चल जइहें बाकिर पैसा ना रहला प घरवा में अभी जेकर लमहर उमिर बा, ओकरो जीअल मुहाल हो जाई।"
हम ढेर देरी ले सोचते रह गउवीं।
कुछ देर बाद हमरा नंबर प सूरज के फोन अउवे। सूरज रो के कहत रहुवन, "गुरूजी, आजी चल गइली।"
हम कुछ बोल ना पउवीं।

राजेश भोजपुरिया
जमशेदपुर- झारखण्ड

राजेश भोजपुरिया

स्मृतिशेषः डॉ० नन्द किशोर तिवारी

भोजपुरी भाषा - साहित्य के प्रकाश स्तम्भ : आदरणीय तिवारी जी

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के प्रकाश स्तम्भ, हिन्दी आ संस्कृत के विद्वान, शोधकर्ता आ प्रतिष्ठित रचनाकार डॉ. नन्द किशोर तिवारी जी के जनम 01 जनवरी,1941 में खरेन्दा गाँव, कैमूर, रोहतास से सटले, बिहार में भइल रहे।

इहां के पढ़ाई लिखाई पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. ऑनर्स, एम.ए. हिन्दी, एम.ए. संस्कृत प्रथम श्रेणी में आ पी-एच.डी, डी लिट् कुल मगध विश्वविद्यालय, गया से भइल। इहां के हिन्दी काव्य शिल्प के विकास पर हिन्दी में आउर विशिष्ट वैदिक शब्दावली के अर्थानुशीलन प संस्कृत में डी.लिट् खातिर दू बार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कनिष्ठ आ वरिष्ठ शोधवृत्ति प्राप्त कइनी।

आदरणीय नंदकिशोर तिवारी जी के कृति आ कीर्ति फलक अतना उजागर बा कि कतनो समेटला प कुछ ना कुछ शेष रह जाई।

तिवारी जी के अध्यापन के काम गया कॉलेज, गया से शुरू भइल रहे। फेर जैन कॉलेज, सासाराम आ ओहिजे आरा वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय आरा में कुल सैंतीस बरिस तक इनका पढ़ावे के मौका मिलल। सेवानिवृत भइला के बाद लिखे - पढ़े आ शोध निर्देशन में लगातार लागल रहनी।

लगभग डेढ़ सौ लोगन के हिन्दी, संस्कृत, भोजपुरी, दर्शनशास्त्र, इतिहास, प्राचीन इतिहास, भाषा विज्ञान में विभिन्न विषय पर आपन निर्देशन में शोध करावे के गौरव डॉ नन्द किशोर तिवारी जी के प्राप्त बा।
डॉ. तिवारी 1972 से रोहतास जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्थापना काल से अब तक एकर प्रधान मंत्री बानी। एकरा माध्यम से कई दर्जन पुस्तकन, कविता, उपन्यास, आलोचना, इतिहास, अनुवाद इत्यादि के प्रकाशन भी भइल।

इहां के बाहर के विश्वविद्यालयन में जाये के, भाषण देवे के आ परीक्षक बने के सुयोग मिलल बा । लखनऊ, दिल्ली, राँची, शांतिनिकेतन, काशी विश्वविद्यालय, विद्यापीठ, पूर्वांचल आदि में जाये के अवसर मिलल बा।

राष्ट्रभाषा परिषद के पुरस्कार समिति के निर्णायक सदस्यन में, भोजपुरी भाषा मे सम्पादन आ अनुवाद का क्षेत्र में डॉ तिवारी अदभुत काम कइले बानी । भोजपुरी भाषा मे भोजपुरी महाकाव्य 'कुंजन रामायण' आ 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उदभव आ विकास' के डॉ तिवारी जी कुशल सम्पादन कइले बानी।

माई के बोली के तेरह गो अंक के प्रकाशन आ भोजपुरी पत्रिका 'सुरसती' भोजपुरी तिमाही, साहित्य परिषद सासाराम के मुख पत्र के संपादन भी इहां के देखरेख में होत रहल । इहां के भोजपुरी अकादमी के दू बार सदस्य भी रही।

लोगन खातिर अचरज के बात होई कि इहां के संस्कृत के महान नाटककार 'भास' के कुल तेरह गो नाटकन के भोजपुरी में अनुवाद कइले बानी, जेकरा खातिर दिल्ली अनुवाद परिषद द्वारा तिवारी जी के एगारह हजार रोपया के पुरस्कार आ वाग्देवी के मूर्ति सम्मान का रूप में दिहल गइल रहे।

इहां के जमशेदपुर आगमन भी भइल बा । हमरा इयाद बा जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद के स्वर्ण जयंती 2005 के अवसर पर एगो बड़हन आयोजन में शामिल होखे खातिर सासाराम से आइल रहीं।

इहां के भोजपुरी निबन्ध संग्रह 'बतकही' के प्रकाशन भी करवनी । इहां के भोजपुरी में आकाशवाणी से सैकड़न वार्ता प्रसारित करा के भोजपुरी भाषा के विकास में आपन महत्वपूर्ण काम कइले बानीं।

इहां के रोहतास के संत आ साहित्यकार प एगो ग्रन्थ लिखले बानी, जवन 2014 में प्रकाशित भईल रहे।

अनेक पत्र पत्रिका के संपादन के अलावा इहां के अबही प्रत्याभिता (हिन्दी तिमाही), सुरसती (भोजपुरी तिमाही), हृदय संदेश (मासिक) के संपादन - प्रकाशन अपना बूते नियमित कर रहल बानीं । हालांकि सुरसती पत्रिका बंद हो गइल बिया बाकिर एकरा के निरंतर प्रकाशित करावे खातिर लगातार प्रयास में रहीं। इहां के 75 साल भइला पर एगो अभिनदंन ग्रन्थ के प्रकाशन भी भइल रहे, जवन तिवारी जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर समर्पित रहे।

डॉ नन्द किशोर तिवारी जी के हिन्दी में भी कई गो प्रकाशित ग्रन्थ बाड़ी सन, जवना में - शील: परिशीलन एवं परिबोध, चलो मन पावन गीताघाट, रोहतास के ग्राम - नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, रोहतास के संत और साहित्यकार, कबीरदास का माया विभावन, तुलसी साहित्य में माया, साहित्य निर्माताओं का साहचर्य - लोक, महाकवि निराला का काव्य - शिल्प, पत्र - कौमुदी इत्यादि प्रमुख बाड़ी सन।

इहां के भोजपुरी में भी निरंतर कलम चलत रहल बा आ भोजपुरी में भी कई गो ग्रन्थ प्रकाशित बा, जवना में -
नाटक रतनमाला, महाकवि भास के समस्त (तेरह) नाटकन के भोजपुरी अनुवाद, मौलिक नाटक - पत्थल के मेहरारू, भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त कतिपय शब्दन के निर्वाचन, कलसा (भोजपुरी निबंध संग्रह), सुमिरि मइआ सरधा हो (भोजपुरी निबंध संग्रह), बतकही (भोजपुरी निबंध संग्रह), भोजपुरी के कतिपय शब्दन के वैदिक स्रोत आ स्वरूप इत्यादि प्रमुख बाड़ी सन।

बेमिसाल विद्वता के धनी तिवारी जी के व्यक्तित्व आ सादगी प्रेरणादायक बा। बिना कवनो तामझाम के इहां के रहन सहन बहुत प्रभावित करे ला। उमिर के एह ढलान पर तिवारी जी अनमोल ग्रन्थन से समृद्ध पुस्तकालय के बड़ा ततपरता, तन्मयता से सँवारे सरिआवे में लागल बानी।

आदरणीय डॉ नन्द किशोर तिवारी जी स्वस्थ रही, दीर्घायु होखी आ भोजपुरी के युवा रचनाकार, साहित्यकार लोगन के मार्गदर्शन देत रही। इहे कामना बा।

डॉ0 विमल कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कुँवर सिंह पी.जी. कॉलेज, बलिया

डॉ० विमल कुमार

डॉ० भीमराव अम्बेड़कर: जीवन संग्राम आ विचार के क्रांति

कवनो आदमी जन्म से महान ना होला, ई महानता ओकरा अपना जीवन में त्याग आ परिश्रम के भारी पूँजी लगा के पावे के पड़ेला। डॉ. अंबेडकर के जीवन के कहानी भी कुछ अइसने बा। विपरीत परिस्थिति में जीवन यात्रा तय करे वाला डॉ. अंबेडकर कइसे एगो बड़ समाज के मुक्तिदाता के रूप में सोझा अइले ? ई जानल बेहद रोचक बा।

जिनगी के कवनो अइसन पहलू नइखे जेवना के डॉ. अंबेडकर के विचार ना छुवले होखे। जेवना तरह एगो वैज्ञानिक प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के प्रयोग क के अपना निष्कर्ष के प्रतिपादन करेला, ओइसही डॉ. अंबेडकर भी भारतीय समाज रूपी प्रयोगशाला में अनूठा प्रयोग कइले बाड़े आ नया विचारन के प्रतिपादन कइले बाड़े।

जीवन-

डॉ. भीमराव अंबेडकर के जन्म 14 अप्रैल, 1891 के इंदौर के लगे महू नामक छावनी कस्बा में भइल रहे। इनकर पूरा नाम ह भीमराव रामजी अंबेडकर। अंबेडकर जवना महार जाति में पैदा भइले ऊ एगो तथाकथित अछूत जाति रहे। महार दूसरा अछूत समुदायन के मुकाबला अधिका साधनहीन रहलन बाकिर ई लोग सामाजिक रूप से ढेर गतिशील रहे लो। बचपने में अंबेडकर के सामना अस्पृश्यता रूपी कलंक से भइल। अंबेडकर के बालमन प एह बातन के बहुते प्रभाव पड़ल कि आखिर काहें कवनो नाई इनकर बार बनावल नइखे चाहत ? आखिर काहें कवनो गाड़ीवान अपना गाड़ी से ले जाए खातिर तैयार नइखे होत ? काहें उनका के कवनो कुआं से पानी पीए के नइखे मिलत ? डॉ. अंबेडकर क उदय ओह अपमानजनक सामाजिक व्यवस्था में भइल, जहवां आदमी असमानता आ मानसिक जकड़न क बेड़ियन में जकड़ल रहे।

डॉ. अंबेडकर बचपन से ही मेधावी रहले। अंबेडकर क प्राथमिक शिक्षा छावनी के प्राथमिक विद्यालय से भइल आ ऊ सतारा से भी अध्ययन कइले। बाद में उनकर बाबूजी मुंबई आ गइलन त ऊ एलफिंस्टन कॉलेज में दाखिला लिहलन। ऊ न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. के डिग्री हासिल कइले आ फेरू 1916 में ऊ लंदन खातिर रवाना हो गइले जहवां उनका के कानून के पढ़ाई खातिर ग्रेज इन में दाखिला मिल गइल। कोलंबिया में ऊ अपना

दूगो प्रोफेसरन - जॉन ड्यूवी और आर. ए. सेलीग्मान से खासतौर से प्रभावित भइले। डॉ. अंबेडकर क विचार प गौतम बुद्ध, कबीर आ ज्योतिबा फुले क प्रभाव स्पष्ट रूप से रहल आ ऊ एह बात के हरदम स्वीकार भी करत रहले। कबीर उनका के भक्ति मार्ग देखवलन त ज्योतिबा फुले से उनका के संघर्ष के प्रेरणा मिलल। बुद्ध से उनका के मानसिक शांति आ समता क संदेश मिलल। उनहीं के आदर्श प चल के ऊ सामूहिक धर्म परिवर्तन कइले।

1917 में ऊ लंदन से भारत आ गइले। 1917 में भारत लौटला प उनका के बड़ौदा महाराजा के सैन्य सचिव के रूप में नौकरी मिलल। बड़ौदा में अपना वास्तविक पहचान के आधार प डॉ. अंबेडकर के रहे खातिर एगो जगह तक ना मिल पावल। एह अपमानजनक अनुभव से डॉ. अंबेडकर के अंतरात्मा बहुते भीतर तक प्रभावित भइल। इहवां से अंबेडकर एगो राजनीतिक योद्धा क रूप में नया अवतार ग्रहण कइलें।

काम - काज -

बरिस 1920 में ऊ कोल्हापुर के महाराजा शाहू महाराज के आर्थिक सहायता से 'मूकनायक' नाम से एगो जर्नल के शुरुआत कइले। 1921 में ऊ मास्टर आफ साइंस के डिग्री हासिल कइले आ अगिला साल 'दि प्रॉब्लम ऑफ रुपी' शीर्षक के तहत आपन शोध पत्र जारी कइले। एकरा बाद ऊ भारत लवटले आ मुंबई में वकालत के शुरुआत कइले आ एहीजे से सार्वजनिक जीवन में उनकर कड़वाहट भरल दिनन के शुरुआत भइल। डॉ. अंबेडकर के अगुआई में शुरू भइल सामाजिक आंदोलन के सफर बहुत लमहर रहल।

जुलाई 1924 में ऊ 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' के गठन कइले । डॉ. अंबेडकर आत्मसम्मान क रक्षा खातिर पूरा दलित समुदाय से संघर्ष क आह्वान कइले। 20 मार्च 1927 के महाड़ में दलित के विशाल सम्मेलन भइल। एकरा में लगभग दस हजार प्रतिनिधि भाग लिहले। अपना अध्यक्षीय भाषण में डॉ. अंबेडकर दलित चेतना के जगावे के काम कइले। ऊ ऊंच आ नीच के भाव के खतम करेके आह्वान कइले, दलितन से अपना गोड़ प खड़ा होखे आ खुद के चेतना से स्वाभिमान आ स्वआदर पैदा करे के बात कहलन। 29 जून 1928 से डॉ. अंबेडकर के अगुआई आ मार्गदर्शन में 'समता' नाम से एगो पाक्षिक शुरू भइल। मई 1930 में डॉ. अंबेडकर नासिक के कालाराम मंदिर में अछूत प्रवेश के आंदोलन खड़ा कइलन। डॉ. अंबेडकर खुद ही सत्याग्रह के अगुवाई कइलन। 1930 के दशक में डॉ. अंबेडकर अंग्रेजन से मांग कइले कि अस्पृश्य लोगन के अलगा से निर्वाचक मंडल के अधिकार दिहल जाव। ब्रिटिश सरकार उनका मांग के आंशिक रूप से सहमति दिहलस बाकिर महात्मा गांधी के अनशन के बाद डॉ. अंबेडकर के अलगा से निर्वाचन मंडल के आपन मांग छोड़े के पड़ल आ 24 सितंबर 1932 के पूना पैक्ट प ऊ साइन कइले।

1936 में अंबेडकर आपन पहिला राजनीतिक पार्टी 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' बनवले।

1942 में ऊ ‘शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन’ के नाम से एगो नया संगठन भी बनवले। 1942 में डॉ. अंबेडकर वायसराय के एग्जीक्यूटिव काउंसिल के सदस्य बनले। डॉ. अंबेडकर के अगुआई में नया औद्योगिक संस्कृति आ मजदूरन के हित के सुरक्षा के अभियान के शुरुआत भइल। अप्रैल 1944 में ऊ एगो विधेयक लिअइले। एकरा अनुसार मजदूरन के तनख़ाह सहित छुट्टी देबे के प्रावधान कइल गइल रहे। अगर देखल जाव त एक तरीका से डॉ. अंबेडकर ही भारत में मजदूर आंदोलन के नींव रखले।

एगो अगुआ के रूप में डॉ. अंबेडकर एक उद्देश्य से दूसरा उद्देश्य क ओर बेहद सधल तरीका से कदम बढ़ावत रहले। सबसे पहिले ऊ अछूत समाज के सुधारे के प्रयास कइले ताकि बहुसंख्यक हिंदू समाज में ओहन लो के भी मान्यता मिल सके। तीस के दशक में ऊ राजनीति में दाखिल होके अगुआ बने के दिशा में प्रयास करत रहलन।

स्वतंत्रता आंदोलन के घरी डॉ आंबेडकर वंचित समूह के नायक के रूप में देश स्तर प उभरलन। 3 अगस्त, 1947 के जवाहरलाल नेहरू उनका के अपना सरकार में विधि मंत्री के रूप में नियुक्त कइलन आ 3 सप्ताह बाद 29 अगस्त के उनका के संविधान के प्रारूप समिति के अध्यक्ष बनवलन। डॉ. अंबेडकर एह तरीका से भारतीय संविधान के निर्माता के रूप में सोझा अइले। डॉ. अंबेडकर संविधान में सामाजिक सुधारन से जुड़ल विशेष प्रावधान कइले जवन भारतीय समाज के बदलाव के वाहक बनल। डॉ. अंबेडकर दीर्घकालिक सुधारन पर बल दिहले आ हिंदू कोड बिल के माध्यम से जरूरी सुधार के कोशिश कइले। अपना मांग प उचित कार्रवाई होत ना देख के सितंबर, 1952 में डॉ. अंबेडकर सरकार से इस्तीफा दे दिहलन। जीवन के अंतिम दिनन में उनकर झुकाव बौद्ध धर्म क ओर हो गइल आ 14 अक्टूबर के दशहरा के महत्वपूर्ण हिंदू पर्व के दिने नागपुर में विशाल जनसमूह के सोझा ऊ बौद्ध धर्म के स्वीकार कर लिहले। 6 दिसंबर 1956 के वंचित समुदाय के एह महानायक के देहांत हो गइल।

विचार-

डॉ. अंबेडकर अपना समकालीन चिंतकन नियन खाली किताबी ज्ञान प ही आधारित ना रहले। बलुक भारतीय आ विदेशी शिक्षा के उच्च स्तरीय बौद्धिक ज्ञान के अनूठा संगम आ सामाजिक आंदोलन के नेता आ समाज सुधार के भूमिका निभावे के दौरान मिलल व्यवहारिक ज्ञान के देन रहले। एकरा संगे - संगे भारतीय संविधान के रचयिता के रूप में ऊ राष्ट्र सेवा से भी अनुभव ग्रहण कइले। अंत में ऊ एगो धार्मिक सन्यासी बनले आ अपना लाखन अनुयायियन के संगे खुद अपना धर्म बौद्ध में वापस आ गइले। डॉ. अंबेडकर के विचारन के सबसे अहम पहलू ई ह कि ऊ अपना ज्ञान के खाली मौखिक परंपरा के माध्यम से ही ना रचलें बलुक सार्वजनिक रूप से अपना दल के लोगन भा अनुयायियन के भाषण ही ना दिहले बलुक ऊ अनुसंधान कइले आ अपना ज्ञान के लिखित रूप में प्रकाशित कइले।

धर्म-

डॉ. अंबेडकर हिंदू धर्म दर्शन के गहराई से अध्ययन कइले। डॉ. अंबेडकर अपना पुस्तकन आ लेखन में हिंदू धर्म के ऐतिहासिक विश्लेषण कइले आ हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीतियन के संदर्भ में साक्ष्य भी प्रस्तुत कइले। डॉ. अंबेडकर धर्म दर्शन के विभिन्न आयामन के विश्लेषण करत हिंदुत्व के दर्शन के व्याख्या कइले। डॉ. अंबेडकर हिंदू धर्म के दर्शन के परीक्षण करे खातिर न्याय के कसौटी आ उपयुक्तता के कसौटी प एकरा के परखलन। ऊ मानत रहले कि न्याय के सिद्धांत एगो सारभूत सिद्धांत ह आ ओकरा में लगभग ओह कुल सिद्धांतन के समावेश बा जवन नैतिक व्यवस्था के आधार बनल बा। न्याय हरदम समानता के सिद्धांत के प्रतिपादन कइले बा आ निष्पक्षता से समानता उभरल बा। डॉ. अंबेडकर हिंदू धर्म के मूल्यांकन करत ई बतावत बाड़े कि जातीय श्रेष्ठता के भाव के वजह से हिंदू धर्म क्षमता आधारित समाज बनावे में असफल रहल बा।

वर्ण, जाति व्यवस्था आ अस्पृश्यता -

अंबेडकर समाज के अस्पृश्य, उपेक्षित आ सदियन से सामाजिक शोषण से त्रस्त दलित वर्ग के राष्ट्र के मुख्यधारा से जोड़े के अभूतपूर्व कार्य ही ना कइले बलुक उनकर पूरा जीवन समाज में व्याप्त रूढ़ियन आ अंधविश्वास प आधारित संकीर्णता आ विकृति के दूर करे प भी केंद्रित रहे। डॉ. अंबेडकर भारत में एगो अइसन वर्गविहीन समाज के संरचना चाहत रहलन जेकरा में जातिवाद, वर्गवाद, संप्रदायवाद आ ऊंच-नीच के भेद ना होखे आ हर आदमी अपना योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्वन के निर्वाहन करत स्वाभिमान आ सम्मानपूर्ण जीवन जी सको।

अस्पृश्यता मिटावे खातिर ऊ ना खाली संघर्ष कइले बलुक संविधान में एकरा निवारण खातिर स्पष्ट प्रावधान भी कइले । ऊ मानव समाज के चुनौती देत कहत बाड़े कि "ई दायित्व एह दुनिया के ह कि ऊ सभ पिछड़ा लोगन के संगे दलितन के जंजीर तूर के ओकरा के आजाद करे।" डॉक्टर अंबेडकर तत्कालीन विचारन के खारिज कर तर्क दिहले कि "टूटल - फूटल मकान के रंगाई पुताई क के ओकर दुर्दशा के छिपावल त जा सकेला बाकिर सुधार ना हो सकेला। अइसन हालत में ओकरा के गिरा के नया मकान बनावल ही उपयुक्त होई।" अंबेडकर के अनुसार अस्पृश्यता के जड़ हिंदू वर्ण व्यवस्था में शामिल बा । एह से ई कुप्रथा के मिटावे खातिर वर्ण व्यवस्था के अंत जरूरी बा। डॉक्टर अंबेडकर शासन के संस्थन में दलित वर्गन के उचित आ पर्याप्त प्रतिनिधित्व प बल दिहले आ सामूहिक भोज औरी अंतरजातीय विवाह के समर्थन कइले।

महिला के स्थिति प विचार-

डॉ. आंबेडकर महिला के उन्नति के प्रबल पक्षधर रहलन। उनकर मानल रहे कि कवनो समाज के मूल्यांकन एह बात से कइल जा सकेला कि ओकरा में महिला के का स्थिति बा ? दुनिया

के लगभग आधा आबादी महिला लोगन के बा, एह से जब तक उनकर समुचित विकास नइखे होत तब तक ओह देश के चहुंमुखी विकास ना हो सकेला।

डॉ. भीमराव अंबेडकर महिला लोगन के स्थिति में सुधार लिआवे खातिर दूगो मुख्य अखबारन के स्थापना भी कइले। 'मूकनायक' आ 'बहिष्कृत भारत' नाम के इ अखबार महिला सशक्तिकरण के मुख्य केंद्र रहल। 18 जुलाई 1927 के करीब तीन हजार महिला लोगन के एगो संगोष्ठि में बाबा साहब कहलन कि रउवां सभे अपना लइकन के स्कूले भेजीं। शिक्षा महिला खातिर ओतने जरूरी बा जेतना पुरूष खातिर। जदि रउवां लिखे -पढ़े आवेला, त समाज में राउर उद्धार संभव बा। 5 फरवरी 1951 के डॉ. भीमराव आंबेडकर संसद में 'हिंदू कोड बिल' पेश कइले। एकर मकसद हिंदू औरतन के सामाजिक शोषण से आजाद करावल आ पुरुष के बराबर अधिकार दिआवल रहे।

राज्य के स्वरूप -

राज्य के स्वरूप से संबंधित डॉ. अंबेडकर के विचार उदारवादी आ लोक कल्याणकारी राज्य के अवधारणा से मिलत - जुलत बा। उदारवादी अवधारणा नियन डॉ. अंबेडकर आदमी के गरिमा के महत्व देलन बाकिर राज्य के अहस्तक्षेप के स्वीकार ना करेलन। ऊ समाजवादी राज्य के संरचना के तरह राज्य के एगो आवश्यक संस्था के रूप में देखेलन बाकिर राज्य के असीमित शक्तियन के अस्वीकार भी करेलन। डॉ. अंबेडकर राज्य आ सरकार से संवेदनशीलता के अपेक्षा करेलन, जवन समाज के वंचित समुदाय खातिर सकारात्मक कदम बा आ एगो अइसन सामाजिक व्यवस्था के स्थापना होखे जहवां स्वतंत्रता, समानता आ बंधुत्व के भाव होखे।

शासन प्रणाली -

डॉ. अंबेडकर संसदीय शासन प्रणाली के समर्थक रहले। ऊ एगो अइसन शासन प्रणाली के पक्ष में रहले जेकरा में कार्यपालिका समर्थ होखला के संगे - संगे उत्तरदायी आ संवेदनशील भी होखे। ई कार्यपालिका व्यवस्थापिका के निर्देशन में काम करे आ ऊ संसदीय व्यवस्था में बहुमत से अल्पमत के हितन के उपेक्षा ना करें।

दलीय प्रणाली के संबंध में डॉ. अंबेडकर द्विदलीय प्रणाली के समर्थक रहले। हालांकि ऊ बहुदलीय प्रणाली के भी स्वीकार कइले।

डॉ. अंबेडकर तटस्थ प्रशासन के समर्थन कइले। उनकर मानल रहे कि प्रशासन के निष्ठा संविधान औरी कानून के प्रति होखे के चाहीं, कवनो विशिष्ट भा सत्तारूढ़ दल के प्रति ना।

ऊ तटस्थता खातिर सिविल सेवा के स्थायित्व औरी संवैधानिक संरक्षण दिहला के पक्षधर रहले। बाकिर लालफीताशाही और लूट प्रणाली के ऊ आलोचना कइले।

लोकतंत्र-

डॉ. अम्बेडकर लोकतंत्र के ना खाली सैद्धांतिक पक्ष बलुक व्यावहारिक लोकतंत्र के पैरोकारी करत रहले। उनका अनुसार लोकतंत्र के जड़ समाज में मनुष्य के आपसी संबंध में जा सकेले। उनकर मानल रहे कि भारतीय समाज में व्याप्त निरक्षरता , निर्धनता औरी जातिगत भेदभाव लोकतंत्र खातिर खतरे बा। शासन प्रणाली के स्तर प ऊ संसदीय लोकतंत्र के अपनावे प जोर दिहले। ऊ खाली राजनीतिक जीवन में लोकतंत्र के समर्थन ही ना करसु बलुक उनकर कहल रहे कि जब तक सामाजिक औरी आर्थिक जीवन में लोकतंत्र ना आई तब तक लोकतंत्र के संकल्पना के साकार ना कइल जा सकेला।

राष्ट्रभाषा-

डॉ. अंबेडकर क्षेत्रीय भाषा औरी बोलियन के विकास के पक्षधर रहले बाकिर ऊ राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के ही प्रतिस्थापित करे प ज्यादा जोर दिहले। ऊ मानत रहले कि हिंदी एगो अइसन भाषा है जवन पूरा राष्ट्र के एकता के सूत्र में बांध सकेले। ऊ भाषाई आधार प प्रांतन के गठन के पक्षधर ना रहले । ऊ भाषावाद के सांप्रदायिकता के ही दूसर रूप मानत रहले ।

राष्ट्रवाद-

वर्तमान में राष्ट्रवाद के विचारधारा वैश्विक स्तर प लोकप्रिय बा जेकरा में संकीर्णताएं औरी सम्प्रदायवाद भी शामिल बा। डॉ अम्बेडकर खातिर राष्ट्रवाद के अर्थ संप्रदायवाद ना रहे। डॉ अम्बेडकर राष्ट्र शब्द के प्रयोग ओह संदर्भ में कइल पसंद करत रहले जेकरा अंतर्गत उनकर आशय राज्य से होके समाज तक जात होख। ऊ राष्ट्रवाद के मानव जीवन में एगो वास्तविक शक्ति के रूप में स्वीकार करत रहले।

निष्कर्ष-

अम्बेडकर के लेखन उनका के एगो अंतरराष्ट्रीय शख्सियत में बदले में महत्वपूर्ण भूमिका निभवलस। दलित समुदाय खातिर डॉ. अम्बेडकर एगो नायक औरी एगो सामाजिक कार्यकर्ता रहले, बाकिर बड़ पैमाना प दुनिया खातिर, अम्बेडकर एगो जागरूक औरी जीवंत विचारक रहले। एगो विचारक के रूप में उनकर साख उनकर लेख, पुस्तक औरी पत्रिका आ उनकर प्रकाशित समाचार पत्रन के माध्यम से स्थापित भइल।

डॉ. अम्बेडकर के विचारधारा एगो नया, जीवंत सामाजिक व्यवस्था के निर्माण खातिर प्रासंगिक बा, जवन कवनो व्यक्ति के गरिमा के बरकरार रख सको, औरी ओकरा के अज्ञानता, शर्म आ अपमान के बंधन से मुक्त कर सको। राष्ट्र - निर्माण के उनकर दृष्टि स्वतंत्रता, समानता औरी बंधुत्व प आधारित बा। ऊ वेदन के अचूकता के त्याग दिहले आ वर्ण व्यवस्था, श्रेणीबद्ध असमानता के खारिज कर दिहले। मानवतावाद और तर्कसंगतता के प्रति उनकर लगाव आ गरीब औरी दलित के प्रति उनकर लगाव एह बात के संकेत देता कि अम्बेडकर एगो महान राष्ट्र निर्माता रहले।

डॉ. अंबेडकर के गिनती भारतीय इतिहास के ओह महान नायकन में होला, जिनकर विचार, दर्शन आ कर्म के असर बहुत बड़ जनसमूह पर तेज आ गहिरा तरीका से पड़ल। डॉ. अंबेडकर वंचित समाज के जिनगी के रूप - रेखा के एकदम बदल के रख दिहलन। "शिक्षित बनऽ, संगठित रहऽ, संघर्ष करऽ" जइसन उनकर मंत्र हाशिया पर रहे वाला समाज में नया चेतना आ जागरूकता के संचार कइलस।

आज देश - विदेश में डॉ. अंबेडकर के कार्यक्रमन के अलग - अलग तरीका से चलावे वाला संगठन आ संस्था त जरूर बा, बाकिर उनकर समग्र दर्शन पर चले वाला आ एगो मजबूत विचारधारा के ढांचा खड़ा करे वाला राजनीतिक संघर्ष के पूरा रूप अभी लिहल बाकी बा।

योगः कर्मसु कौशलम्

9839159190

फ़ीनिक्स स्कूल

कक्षा- नर्सरी से (10+2)

- ★ अनुशासित वातावरण
- ★ क्रियाकलाप आधारित शिक्षा
- ★ योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षक
- ★ वैदिक गणित एवं अबाकस कक्षाएं
- ★ शत-प्रतिशत परीक्षाफल

निःशुल्क

प्रवेश प्रारम्भ

2026-27

Science
Commerce
Humanity

जया वर्मा
जिला टॉपर (PCM)

साक्षी तिवारी
जिला टॉपर (Hindustan Olympiad)

मुख्य शाखाः निमिया पोखरा (कटरिया), अलावलपुर- बलिया

शाखाः कृष्ण-सुदामा नगर (भगवानपुर)- बलिया